

## Hindi Easy-to-Read Version

Language: हिन्दी (Hindi)

Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Hindi Easy-to-Read Version © 1995 by Bible League International.

PDF generated on 2017-08-22 from source files dated 2017-08-22.

a28f7793-64e5-53d1-b0c7-eb243e526a41

ISBN: 978-1-5313-1305-0

## मत्ती

### यीशु की वंशावली

(लूका ३ :२३b-३८)

१ इब्राहीम के वंशज दाऊद के पुत्र यीशु मसीह की वंशावली इस प्रकार है :

२ इब्राहीम का पुत्र था इसहाक

और इसहाक का पुत्र हुआ याकूब ।

फिर याकूब से यहूदा

और उसके भाई उत्पन्न हुए ।

३ यहूदा के बेटे थे फिरिस और जोरह । (उनकी माँ का नाम तामार था । )

फिरिस, हिस्रोन का पिता था ।

हिस्रोन राम का पिता था ।

४ राम अम्मीनादाब का पिता था ।

अम्मीनादाब से नहशोन

और नहशोन से सलमोन का जन्म हुआ ।

५ सलमोन से बोअज का जन्म हुआ । (बोअज की माँ का नाम राहब था । )

बोअज और रूथ से ओबेद पैदा हुआ,

ओबेद यिशै का पिता था ।

६ और यिशै से राजा दाऊद पैदा हुआ ।

सुलैमान दाऊद का पुत्र था (जो उस स्त्री से जन्मा जो पहले उरिय्याह की पत्नी थी । )

७ सुलैमान रहबाम का पिता था ।

और रहबाम अबिय्याह का पिता था ।

अबिय्याह से आसा का जन्म हुआ ।

८ और आसा यहोशाफात का पिता बना ।

फिर यहोशाफात से योराम

और योराम से उज्जिय्याह का जन्म हुआ ।

९ उज्जिय्याह योताम का पिता था

और योताम, आहाज का ।

फिर आहाज से हिजकिय्याह ।

१० और हिजकिय्याह से मनशिशह का जन्म हुआ ।

मनशिशह आमोन का पिता बना

और आमोन योशिय्याह का ।

११ फिर इस्राएल के लोगों को बंदी बना कर बेबिलोन ले जाते समय योशिय्याह से यकुन्याह और उसके भाईयों ने जन्म लिया ।

१२ बेबिलोन में ले जाये जाने के बाद यकुन्याह

शालतिएल का पिता बना ।

और फिर शालतिएल से जरुब्बाबिल ।

१३ तथा जरुब्बाबिल से अबीहूद पैदा हुए ।

अबीहूद इल्याकीम का

और इल्याकीम अजोर का पिता बना ।

१४ अजोर सदोक का पिता था ।

सदोक से अखीम

और अखीम से इलीहूद पैदा हुए ।

१५ इलीहूद इलियाजार का पिता था

और इलियाजार मत्तान का ।

मत्तान याकूब का पिता बना ।

१६ और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ ।

जो मरियम का पति था ।

मरियम से यीशु का जन्म हुआ जो मसीह कहलाया ।

१७ इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं । और दाऊद से लेकर बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये जाने तक की चौदह पीढ़ियाँ, तथा बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये जाने से मसीह के जन्म तक चौदह पीढ़ियाँ और हुईं ।

### यीशु मसीह का जन्म

(लूका २ :१-७)

१८ यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह होने से पहले ही पता चला कि (वह पवित्त्र आत्मा की शक्ति से गर्भवती है । ) १९ किन्तु उसका भावी पति यूसुफ एक अच्छा व्यक्ति था और इसे प्रकट करके लोगों में उसे बदनाम करना नहीं चाहता था । इसलिये उसने निश्चय किया कि चुपके से वह सगाई तोड़ दे ।

२० किन्तु जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, “ओ ! दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्त्र आत्मा की ओर से है । २१ वह एक पुत्र को जन्म देगी । तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा ।”

२२ यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो : २३ “सुनो, एक कुँवारी कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी । उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा ।” \* (जिसका अर्थ है “परमेश्वर हमारे साथ है ।”)

२४ जब यूसुफ नींद से जागा तो उसने वही किया जिसे करने की प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह मरियम को ब्याह कर अपने घर ले आया। २५ किन्तु जब तक उसने पुत्र को जन्म नहीं दे दिया, वह उसके साथ नहीं सोया। यूसुफ ने बेटे का नाम यीशु रखा।

पूर्व से विद्वानों का आना

२ हेरोदेस जब राज कर रहा था, उन्हीं दिनों यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ। कुछ ही समय बाद कुछ विद्वान जो सितारों का अध्ययन करते थे, पूर्व से यरूशलेम आये। २ उन्होंने पूछा, “यहूदियों का नवजात राजा कहाँ है? हमने उसके सितारे को, आकाश में देखा है। इसलिए हम पूछ रहे हैं। हम उसकी आराधना करने आये हैं।”

३ जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह बहुत बेचैन हुआ और उसके साथ यरूशलेम के दूसरे सभी लोग भी चिंता करने लगे। ४ सो उसने यहूदी समाज के सभी प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना है। ५ उन्होंने उसे बताया, “यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि भविष्यवक्ता द्वारा लिखा गया है कि:

६ “ओ, यहूदा की धरती पर स्थित बैतलहम, तू यहूदा के अधिकारियों में किसी प्रकार भी सबसे छोटा नहीं।

क्योंकि तुझ में से एक शासक प्रकट होगा जो मेरे लोगों इस्राएल की देखभाल करेगा।” \*

७ तब हेरोदेस ने सितारों का अध्ययन करने वाले उन विद्वानों को बुलाया और पूछा कि वह सितारा किस समय प्रकट हुआ था। ८ फिर उसने उन्हें बैतलहम भेजा और कहा, “जाओ उस शिशु के बारे में अच्छी तरह से पता लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाये तो मुझे बताओ ताकि मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।”

९ फिर वे राजा की बात सुनकर चल दिये। वह सितारा भी जिसे आकाश में उन्होंने देखा था उनके आगे आगे जा रहा था। फिर जब वह स्थान आया जहाँ वह बालक था, तो सितारा उसके ऊपर रुक गया। १० जब उन्होंने यह देखा तो वे बहुत आनन्दित हुए।

११ वे घर के भीतर गये और उन्होंने उसकी माता मरियम के साथ बालक के दर्शन किये। उन्होंने साष्टांग प्रणाम करके उसकी उपासना की। फिर उन्होंने बहुमूल्य वस्तुओं की अपनी पिटारी खोली और सोना, लोबान और गन्धरस के उपहार उसे अर्पित किये। १२ किन्तु परमेश्वर ने एक स्वप्न में उन्हें सावधान कर दिया, कि वे वापस हेरोदेस के पास न जायें। सो वे एक दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गये।

यीशु को लेकर माता-पिता का मिस्र जाना

१३ जब वे चले गये तो यूसुफ को सपने में प्रभु के एक दूत ने प्रकट होकर कहा, “उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर चुपके से मिस्र चला जा और मैं जब तक तुझे से न कहूँ, वहीं ठहरना। क्योंकि हेरोदेस इस बालक को मरवा डालने के लिए ढूँढेगा।”

१४ सो यूसुफ खड़ा हुआ तथा बालक और उसकी माता को लेकर रात में ही मिस्र के लिए चल पड़ा। १५ फिर हेरोदेस के मरने तक वह वहीं ठहरा रहा। यह इसलिये हुआ कि प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कहा था, पूरा हो सके: “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर आने को कहा।” †

बैतलहम के सभी बालकों का हेरोदेस के द्वारा मरवाया जाना

१६ हेरोदेस ने जब यह देखा कि सितारों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने उसके साथ चाल चली है, तो वह आग बबूला हो उठा। उसने आज्ञा दी कि बैतलहम और उसके आसपास में दो वर्ष के या उससे छोटे सभी बालकों की हत्या कर दी जाये। (सितारों का अध्ययन करने वाले विद्वानों के बताये समय को आधार बना कर) १७ तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा कहा गया यह वचन पूरा हुआ:

१८ “रामाह में दुःख भरा एक शब्द सुना गया, शब्द रोने का, गहरे विलाप का था।

राहेल अपने शिशुओं के लिए रोती थी चाहती नहीं थी कोई उसे धीरज बँधाए, क्योंकि उसके तो सभी बालक मर चुके थे।” ‡

\*२ :६ उद्धरण मीका ५ :२

†२ :१५ उद्धरण होशे ११ :१

‡२ :१८ उद्धरण यिर्मयाह ३१ :१५

यीशु को लेकर यूसुफ और मरियम का मिस्र लौटना

१९ फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र में यूसुफ के सपने में प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ २० और उससे बोला, “उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल की धरती पर चला जा क्योंकि वे जो बालक को मार डालना चाहते थे, मर चुके हैं।”

२१ तब यूसुफ खड़ा हुआ और बालक तथा उसकी माता को लेकर इस्राएल जा पहुँचा। २२ किन्तु जब यूसुफ ने यह सुना कि यहूदिया पर अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर अरखिलास राज कर रहा है तो वह वहाँ जाने से डर गया किन्तु सपने में परमेश्वर से आदेश पाकर वह गलील प्रदेश के लिए २३ चल पड़ा और वहाँ नासरत नाम के नगर में घर बना कर रहने लगा ताकि भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया वचन पूरा हो : वह नासरी कहलायेगा।

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का कार्य

(मरकुस १ : १-८ ; लूका ३ : १-९,  
१५-१७ ; यूहन्ना १ : १९-२८)

३ १ उन्हीं दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश देता हुआ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया। २ वह प्रचार करने लगा, “मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य आने को है।” ३ यह यूहन्ना वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ता यशायाह ने चर्चा करते हुए कहा था : “जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज है : प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो और उसके लिए राहें सीधी करो।” ४

५ यूहन्ना के वस्त्र ऊँट की ऊन के बने थे और वह कमर पर चमड़े की पेट्टी बाँधे था। टिड्डियाँ और जँगली शहद उसका भोजन था। ६ उस समय यरूशलेम, समूचे यहूदिया क्षेत्र और यर्दन नदी के आसपास के लोग उसके पास आ इकट्ठे हुए। ७ उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया और यर्दन नदी में उन्हें उसके द्वारा बपतिस्मा दिया गया।

७ जब उसने देखा कि बहुत से फ़रीसी और सद्की ८ उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे हैं तो वह उनसे बोला, “ओ, साँप के बच्चों! तुम्हें किसने चेता दिया है कि तुम प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो? ९ तुम्हें प्रमाण देना होगा कि तुममें वास्तव में मन फिराव हुआ है। १० और मत सोचो कि अपने आप से यह कहना ही काफी होगा कि हम इब्राहीम की संतान हैं। मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता है। ११ पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। और हर वह पेड़ जो उत्तम फल नहीं देता काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक दिया जायेगा।

१२ “मैं तो तुम्हें तुम्हारे मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझे से महान है। मैं तो उसके जूतों के तस्मे खोलने योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा देगा। १३ उसके हाथों में उसका छाज है जिस से वह अनाज को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान से वह साफ किये समस्त अनाज को उठा, इकट्ठा कर, कोठियों में भरेगा और भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी बुझाए नहीं बुझेगी।”

यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना

(मरकुस १ : ९-११ ; लूका ३ : २१-२२)

१३ उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। १४ किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, “मुझे तो स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?”

१५ उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।” फिर उसने वैसा ही होने दिया।

१६ और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर की आत्मा को एक कबूतर की तरह

\*२ : २३ नासरी एक व्यक्ति जो नासरत का रहने वाला हो। नासरत का अर्थ संभवतः “शाखा।” देखें यशायाह ११ : १

†३ : ३ उद्धरण यशायाह ४० : ३

‡३ : ७ फ़रीसी एक यहूदी धार्मिक समूह, जो ‘पुराना धर्म नियम’ और दूसरे यहूदी नियमों तथा रीति-रिवाजों का कट्टरता से पालन करने का दावा करता है।

§३ : ७ सद्की एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो ‘पुराना धर्म नियम’ की केवल पहली पाँच पुस्तकों को ही स्वीकार करता है और किसी के मर जाने के बाद उसका पुनरुत्थान नहीं मानता।

नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा।<sup>१७</sup> तभी यह आकाशवाणी हुई : “यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।”

यीशु की परीक्षा

(मरकुस १ :१२-१३ ; लूका ४ :१-१३)

१ फिर आत्मा यीशु को जंगल में ले गई ताकि शैतान के द्वारा उसे परखा जा सके।<sup>२</sup> चालीस दिन और चालीस रात भूखा रहने के बाद जब उसे भूख बहुत सताने लगी<sup>३</sup> तो उसे परखने वाला उसके पास आया और बोला, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कहो कि ये रोटियाँ बन जायें।”

४ यीशु ने उत्तर दिया, “शास्त्र में लिखा है, ‘मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता बल्कि वह प्रत्येक उस शब्द से जीता है जो परमेश्वर के मुख से निकालता है।’” \*

५ फिर शैतान उसे यरूशलेम के पवित्र नगर में ले गया। वहाँ मन्दिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा करके<sup>६</sup> उसने उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो नीचे कूद पड़ क्योंकि शास्त्र में लिखा है :

‘वह तेरी देखभाल के लिये अपने दूतों को आज्ञा देगा

और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ताकि तेरे पैरों में कोई पत्थर तक न लगे।’” †

७ यीशु ने उत्तर दिया, “किन्तु शास्त्र यह भी कहता है,

‘अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में मत डाल।’” ‡

८ फिर शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया। और उस संसार के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया।<sup>९</sup> शैतान ने तब उससे कहा, “ये सभी वस्तुएँ मैं तुझे दे दूँगा यदि तू मेरे आगे झुके और मेरी उपासना करे।”

१० फिर यीशु ने उससे कहा, “शैतान, दूर हो! शास्त्र कहता है :

‘अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर और केवल उसी की सेवा कर।’” §

११ फिर शैतान उसे छोड़ कर चला गया और स्वर्गदूत आकर उसकी देखभाल करने लगे।

यीशु के कार्य का आरम्भ

(मरकुस १ :१४-१५ ; लूका ४ :१४-१५)

१२ यीशु ने जब सुना कि यूहन्ना पकड़ा जा चुका है तो वह गलील लौट आया।<sup>१३</sup> परन्तु वह नासरत में नहीं ठहरा और जाकर कफरनहूम में, जो जबूलून और नपताली के क्षेत्र में गलील की झील के पास था, रहने लगा।<sup>१४</sup> यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा जो कहा, वह पूरा हो :

१५ “जबूलून और नपताली के देश सागर के रास्ते पर, यर्दन नदी के पश्चिम में, और यहूदियों के देश गलील में।

१६ जो लोग अँधेरे में जी रहे थे उन्होंने एक महान ज्योति देखी और जो मृत्यु की छाया के देश में रहते थे उन पर, ज्योति के प्रभात का एक प्रकाश फैला।” §

१७ उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया : “मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।”

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

(मरकुस १ :१६-२० ; लूका ५ :१-११)

१८ जब यीशु गलील की झील के पास से जा रहा था उसने दो भाईयों को देखा शमौन (जो पतरस कहलाया) और उसका भाई अंदिरयास। वे झील में अपने जाल डाल रहे थे। वे मछुआरे थे।<sup>१९</sup> यीशु ने उनसे कहा, “मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये मछुलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछुलियाँ कैसे पकड़ी जाती हैं।”<sup>२०</sup> उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे हो लिये।

२१ फिर वह वहाँ से आगे चल पड़ा और उसने देखा कि जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना अपने पिता के साथ नाव में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया।<sup>२२</sup> और वे तत्काल नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे चल दिये।

\*४ :४ उद्धरण व्यवस्थाविवरण ८ :३

†४ :६ उद्धरण भजन संहिता ११ :११-१२

‡४ :७ उद्धरण व्यवस्थाविवरण ६ :१६

§४ :१० उद्धरण व्यवस्थाविवरण ६ :३३

§४ :१६ उद्धरण यशायाह ९ :१-२

यीशु का लोगों को उपदेश और उन्हें चंगा करना  
(लूका ६:१७-१९)

२३ यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी आराधनालयों में स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देता और हर प्रकार के रोगों और संतापों को दूर करता घूमने लगा। २४ समस्त सीरिया देश में उसका समाचार फैल गया। इसलिये लोग ऐसे सभी व्यक्तियों को जो संतापी थे, या तरह तरह की बीमारियों और वेदनाओं से पीड़ित थे, जिन पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे थे, उसके पास लाने लगे। यीशु ने उन्हें चंगा किया। २५ इसलिये गलील, दस नगर, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन नदी पार के लोगों की बड़ी बड़ी भीड़ उसका अनुसरण करने लगी।

यीशु का उपदेश

(लूका ६:२०-२३)

१ यीशु ने जब यह बड़ी भीड़ देखी, तो वह एक पहाड़ पर चला गया। वहाँ वह बैठ गया और उसके अनुयायी उसके पास आ गये। २ तब यीशु ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा :

३ “धन्य हैं वे जो हृदय से दीन हैं,  
स्वर्ग का राज्य उनके लिए है।

४ धन्य हैं वे जो शोक करते हैं,  
क्योंकि परमेश्वर उन्हें सांतवन देता है

५ धन्य हैं वे जो नम्र हैं  
क्योंकि यह पृथ्वी उन्हीं की है।

६ धन्य हैं वे जो नीति के प्रति भूखे और प्यासे  
रहते हैं!

क्योंकि परमेश्वर उन्हें संतोष देगा, तृप्ति देगा।

७ धन्य हैं वे जो दयालु हैं

क्योंकि उन पर दया गगन से बरसेगी।

८ धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं

क्योंकि वे परमेश्वर के दर्शन करेंगे।

९ धन्य हैं वे जो शान्ति के काम करते हैं।

क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।

१० धन्य हैं वे जो नीति के हित में यातनाएँ भोगते  
हैं।

स्वर्ग का राज्य उनके लिये ही है।

११ “और तुम भी धन्य हो क्योंकि जब लोग तुम्हारा अपमान करें, तुम्हें यातनाएँ दें, और मेरे लिये तुम्हारे विरोध में तरह तरह की झूठी बातें

कहें, बस इसलिये कि तुम मेरे अनुयायी हो, १२ तब तुम प्रसन्न रहना, आनन्द से रहना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। यह वैसा ही है जैसे तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं को लोगों ने सताया था।

तुम नमक के समान हो : तुम प्रकाश के समान हो

(मरकुस ९:५० ; ४:२१ ; लूका

१४:३४-३५ ; ८:१६)

१३ “तुम समूची मानवता के लिये नमक हो। किन्तु यदि नमक ही बेस्वाद हो जाये तो उसे फिर नमकीन नहीं बनाया जा सकता है। वह फिर किसी काम का नहीं रहेगा। केवल इसके, कि उसे बाहर लोगों की टोकरी में फेंक दिया जाये।

१४ “तुम जगत के लिये प्रकाश हो। एक ऐसा नगर जो पहाड़ की चोटी पर बसा है, छिपाये नहीं छिपाया जा सकता। १५ लोग दीया जलाकर किसी बाल्टी के नीचे उसे नहीं रखते बल्कि उसे दीवट पर रखा जाता है और वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। १६ लोगों के सामने तुम्हारा प्रकाश ऐसे चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और स्वर्ग में स्थित तुम्हारे परम पिता की महिमा का बखान करें।

यीशु और यहूदी धर्म-नियम

१७ “यह मत सोचो कि मैं मूसा के धर्म-नियम या भविष्यवक्ताओं के लिखे को नष्ट करने आया हूँ। मैं उन्हें नष्ट करने नहीं बल्कि उन्हें पूर्ण करने आया हूँ। १८ मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि जब तक धरती और आकाश समाप्त नहीं हो जाते, मूसा की व्यवस्था का एक एक शब्द और एक एक अक्षर बना रहेगा, वह तब तक बना रहेगा जब तक वह पूरा नहीं हो लेता।

१९ “इसलिये जो इन आदेशों में से किसी छोटे से छोटे को भी तोड़ता है और लोगों को भी वैसा ही करना सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में कोई महत्व नहीं पायेगा। किन्तु जो उन पर चलता है और दूसरों को उन पर चलने का उपदेश देता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान समझा जायेगा। २० मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक तुम व्यवस्था के उपदेशकों और फरीसियों से धर्म के आचरण में आगे न निकल जाओ, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे।

## क्रोध

२१ “तुम जानते हो कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था ‘हत्या मत करो’\* और यदि कोई हत्या करता है तो उसे अदालत में उसका जवाब देना होगा।’<sup>२२</sup> किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यक्ति अपने भाई पर क्रोध करता है, उसे भी अदालत में इसके लिये उत्तर देना होगा और जो कोई अपने भाई का अपमान करेगा उसे सर्वोच्च संघ के सामने जवाब देना होगा और यदि कोई अपने किसी बन्धु से कहे ‘अरे असभ्य, मूर्ख!’ तो नरक की आग के बीच उस पर इसकी जवाब देही होगी।

२३ “इसलिये यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा है और वहाँ तुझे याद आये कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कोई विरोध है<sup>२४</sup> तो तू उपासना की भेंट को वहीं छोड़ दे और पहले जा कर अपने उस बन्धु से सुलह कर। और फिर आकर भेंट चढ़ा।

२४ “तेरा शत्रु तुझे न्यायालय में ले जाता हुआ जब रास्ते में ही हो, तू झटपट उसे अपना मित्र बना ले कहीं वह तुझे न्यायी को न सौंप दे और फिर न्यायी सिपाही को, जो तुझे जेल में डाल देगा।<sup>२५</sup> मैं तुझे सत्य बताता हूँ तू जेल से तब तक नहीं छूट पायेगा जब तक तू पाई-पाई न चुका दे।

## व्यभिचार

२७ “तुम जानते हो कि यह कहा गया है, ‘व्यभिचार मत करो।’<sup>२८</sup> किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई किसी स्त्री को वासना की आँख से देखता है, तो वह अपने मन में पहले ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका है।<sup>२९</sup> इसलिये यदि तेरी दाहिनी आँख तुझ से पाप करवाये तो उसे निकाल कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का कोई एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर ही नरक में डाल दिया जाये।<sup>३०</sup> और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सम्पूर्ण शरीर ही नरक में चला जाये।

## तलाक

(मत्ती १९:९; मरकुस १०:११-१२; लूका १६:१८)

३१ “कहा गया है, ‘जब कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है तो उसे अपनी पत्नी को लिखित रूप में तलाक देना चाहिये।’<sup>३२</sup> किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह व्यक्ति जो अपनी पत्नी को तलाक देता है, यदि उसने यह तलाक उसके व्यभिचारी आचरण के कारण नहीं दिया है तो जब वह दूसरा विवाह करती है, तो मानो वह व्यक्ति ही उससे व्यभिचार करवाता है। और जो कोई उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह रचाता है तो वह भी व्यभिचार करता है।

## शपथ

३३ “तुमने यह भी सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, ‘तू शपथ मत तोड़ बल्कि पूरभु से की गयी प्रतिज्ञाओं को पूरा कर।’<sup>३४</sup> किन्तु मैं तुझसे कहता हूँ कि शपथ ले ही मत। स्वर्ग की शपथ मत ले क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है।<sup>३५</sup> धरती की शपथ मत ले क्योंकि यह उसकी पाँव की चौकी है। यरूशलेम की शपथ मत ले क्योंकि यह महा सम्राट का नगर है।<sup>३६</sup> अपने सिर की शपथ भी मत ले क्योंकि तू किसी एक बाल तक को सफेद या काला नहीं कर सकता है।<sup>३७</sup> यदि तू ‘हाँ’ चाहता है तो केवल ‘हाँ’ कह और ‘ना’ चाहता है तो केवल ‘ना’ क्योंकि इससे अधिक जो कुछ है वह शैतान से है।

## बदले की भावना मत रख

(लूका ६:२९-३०)

३८ “तुमने सुना है: कहा गया है, ‘आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत।’<sup>३९</sup> किन्तु मैं तुझ से कहता हूँ कि किसी बुरे व्यक्ति का भी विरोध मत कर। बल्कि यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ़ कर दे।<sup>४०</sup> यदि कोई तुझ पर मुकद्दमा चला कर तेरा कुर्ता भी उतरवाना चाहे तो तू उसे अपना चोगा तक दे दे।<sup>४१</sup> यदि कोई तुझे एक मील चलाए तो तू उसके साथ दो मील चला जा।<sup>४२</sup> यदि कोई तुझसे कुछ

\*५:२१ उद्धरण निर्गमन २०:१३; व्यवस्था विवरण ५:१७

†५:२७ उद्धरण निर्गमन २०:१४; व्यवस्था विवरण ५:१८

‡५:३१ उद्धरण व्यवस्था विवरण २४:१

§५:३३ देखें लैव्य. १९:१२; गिनती ३०:२; व्यवस्था विवरण. २३:२१

¶५:३८ उद्धरण निर्गमन २१:२४; लैव्यव्यवस्था २४:२०

माँगे तो उसे वह दे दे। जो तुझसे उधार लेना चाहे, उसे मना मत कर।

सबसे प्रेम रखो

(लूका ६:२७-२८, ३२-३६)

१३ “तुमने सुना है: कहा गया है ‘तू अपने पड़ोसी से प्रेम कर \*और शत्रु से घृणा कर।’ १४ किन्तु मैं कहता हूँ अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। १५ ताकि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सिद्ध सतान बन सको। क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश चमकाता है। पापियों और धर्मियों, सब पर वर्षा कराता है। १६ यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा। क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नहीं करते? १७ यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी भी नहीं करते? १८ इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे तुम्हारा स्वर्ग-पिता परिपूर्ण है।

दान की शिक्षा

१ “सावधान रहो! परमेश्वर चाहता है, उन कामों का लोगों के सामने दिखावा मत करो नहीं तो तुम अपने परम-पिता से, जो स्वर्ग में है, उसका प्रतिफल नहीं पाओगे।

२ “इसलिये जब तुम किसी दीन-दुःखी को दान देते हो तो उसका ढोल मत पीटो, जैसा कि आराधनालयों और गलियों में कपटी लोग औरों से प्रशंसा पाने के लिए करते हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो इसका पूरा फल पहले ही दिया जा चुका है। ३ किन्तु जब तू किसी दीन दुःखी को देता है तो तेरा बायाँ हाथ न जान पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। ४ ताकि तेरा दान छिपा रहे। तेरा वह परम पिता जो तू छिपाकर करता है उसे भी देखता है, वह तुझे उसका प्रतिफल देगा।

प्रार्थना का महत्व

(लूका ११:२-४)

५ “जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों की तरह मत करो। क्योंकि वे यहूदी आराधनालयों और गली के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो उसका फल पहले ही मिल चुका है। ६ किन्तु जब तू प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द करके गुप्त रूप से अपने परम-पिता से प्रार्थना कर। फिर तेरा परम-पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।

७ “जब तुम प्रार्थना करते हो तो विधर्मियों की तरह यूँ ही निरर्थक बातों को बार-बार मत दुहराते रहो। वे तो यह सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुन ली जायेगी। ८ इसलिये उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा परम-पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी आवश्यकता क्या है। ९ इसलिए इस प्रकार प्रार्थना करो:

‘स्वर्ग धाम में हमारे पिता,  
तेरा नाम पवित्र रहे।

१० जगत में तेरा राज्य आए।

तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो।

११ दिन प्रतिदिन का आहार तू आज हमें दे।

१२ अपराधों को क्षमा दान कर

जैसे हमने अपने अपराधी क्षमा किये।

१३ हमें परीक्षा में न ला

परन्तु बुराई से बचा।’ †

१४ यदि तुम लोगों के अपराधों को क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग-पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

१५ किन्तु यदि तुम लोगों को क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा परम-पिता भी तुम्हारे पापों के लिए क्षमा नहीं देगा।

उपवास की व्याख्या

१६ “जब तुम उपवास करो तो मुँह लटकाये कपटियों जैसे मत दिखो। क्योंकि वे तरह तरह से मुँह बनाते हैं ताकि वे लोगों को जतायें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ उन्हें तो पहले ही उनका प्रतिफल मिल चुका है।

\*५:४३ उद्धरण लैव्यव्यवस्था १९:१८

†६:१३ कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है: “क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।”



१७ किन्तु जब तू उपवास रखे तो अपने सिर पर सुगंध मल और अपना मुँह धो। १८ ताकि लोग यह न जानें कि तू उपवास कर रहा है। बल्कि तेरा परम-पिता जिसे तू देख नहीं सकता, देखे कि तू उपवास कर रहा है। तब तेरा परम पिता जो तेरे छिपकर किए गए सब कर्मों को देखता है, तुझे उनका प्रतिफल देगा।

परमेश्वर धन से बड़ा है

(लूका १२ : ३३-३४ ; ११ : ३४-३६ ; १६ : १३)

११ “अपने लिये धरती पर भंडार मत भरो। क्योंकि उसे कीड़े और जंग नष्ट कर देंगे। चोर सेंध लगाकर उसे चुरा सकते हैं। २० बल्कि अपने लिये स्वर्ग में भण्डार भरो जहाँ उसे कीड़े या जंग नष्ट नहीं कर पाते। और चोर भी वहाँ सेंध लगा कर उसे चुरा नहीं पाते। २१ याद रखो जहाँ तुम्हारा भंडार होगा वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

२२ “शरीर के लिये प्रकाश का स्रोत आँख है। इसलिये यदि तेरी आँख ठीक है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशवान रहेगा। २३ किन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो जाए तो तेरा सारा शरीर अंधेरे से भर जायेगा। इसलिये वह एकमात्र प्रकाश जो तेरे भीतर है यदि अंधकारमय हो जाये तो वह अंधेरा कितना गहरा होगा।

२४ “कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम। या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की एक साथ सेवा नहीं कर सकते।

चिंता छोड़ो

(लूका १२ : २२-३४)

२५ “मैं तुमसे कहता हूँ अपने जीने के लिये खाने-पीने की चिंता छोड़ दो। अपने शरीर के लिये वस्त्रों की चिंता छोड़ दो। निश्चय ही जीवन भोजन से और शरीर कपड़ों से अधिक महत्वपूर्ण है। २६ देखो! आकाश के पक्षी न तो बुआई करते हैं और न कटाई, न ही वे कोठारों में अनाज भरते हैं किन्तु तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनका भी पेट भरता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो? २७ तुम में से क्या कोई ऐसा है जो चिंता करके अपने जीवन काल में एक घड़ी भी और बढ़ा सकता है?

२८ “और तुम अपने वस्त्रों की क्यों सोचते हो? सोचो जंगल के फूलों की वे कैसे खिलते हैं। वे न कोई काम करते हैं और न अपने लिए कपड़े बनाते

हैं। २९ मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान भी अपने सारे वैभव के साथ उनमें से किसी एक के समान भी नहीं सज सका। ३० इसलिये जब जंगली पौधों को जो आज जीवित हैं पर जिन्हें कल ही भाड़ में झोंक दिया जाना है, परमेश्वर ऐसे वस्त्र पहनाता है तो और ओ कम विश्वास रखने वालों, क्या वह तुम्हें और अधिक वस्त्र नहीं पहनायेगा?

३१ “इसलिये चिंता करते हुए यह मत कहो कि हम क्या खायेंगे या हम क्या पीयेंगे या क्या पहनेंगे? ३२ विधर्मी लोग इन सब वस्तुओं के पीछे दौड़ते रहते हैं किन्तु स्वर्ग धाम में रहने वाला तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। ३३ इसलिये सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और तुमसे जो धर्म भावना वह चाहता है, उसकी चिंता करो। तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें दे दी जायेंगी। ३४ कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की तो अपनी और चिंताएँ होंगी। हर दिन की अपनी ही परेशानियाँ होती हैं।

यीशु का वचन: दूसरों को दोषी ठहराने के प्रति

(लूका ६ : ३७-३८, ४१-४२)

७ “दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाये। २ क्योंकि तुम्हारा न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर तुम्हें उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा है।

३ “तू अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों देखता है? जबकि तुझे अपनी आँख का लट्टा भी दिखाई नहीं देता। ४ जब तेरी अपनी आँख में लट्टा समाया है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है कि तू मुझे तेरी आँख का तिनका निकालने दे। ५ ओ कपटी! पहले तू अपनी आँख से लट्टा निकाल, फिर तू ठीक तरह से देख पायेगा और अपने भाई की आँख का तिनका निकाल पायेगा।

६ “कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। और सुअरों के आगे अपने मोती मत बिखरो। नहीं तो वे सुअर उन्हें पैरों तले रौंद डालेंगे। और कुत्ते पलट कर तुम्हारी भी धज्जियाँ उड़ा देंगे।

जो कुछ चाहते हो, उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो

(लूका ११ : ९-१३)

७ “परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा। खोजते रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो

तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा।<sup>८</sup> क्योंकि हर कोई जो माँगता ही रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और जो खटखटाता ही रहता है उसके लिए द्वार खोल दिया जाएगा।

१० “तुम में से ऐसा पिता कौन सा है जिसका पुत्र उससे रोटी माँगे और वह उसे पत्थर दे ?<sup>१०</sup> या जब वह उससे मछली माँगे तो वह उसे साँप दे दे। बताओ क्या कोई देगा ? ऐसा कोई नहीं करेगा।<sup>११</sup> इसलिए यदि चाहे तुम बुरे ही क्यों न हो, जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार कैसे दिये जाते हैं। सो निश्चय ही स्वर्ग में स्थित तुम्हारा परम-पिता माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देगा।

### व्यवस्था की सबसे बड़ी शिक्षा

१२ “इसलिये जैसा व्यवहार अपने लिये तुम दूसरे लोगों से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ करो। व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ताओं के लिखे का यही सार है।

### स्वर्ग और नरक का मार्ग

(लूका १३ : २४)

१३ “सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल रहे हैं।<sup>१४</sup> किन्तु कितना संकरा है वह द्वार और कितनी सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।

कर्म ही बताते हैं कि कौन कैसा है

(लूका ६ : ४३-४४ ; १३ : २५-२७)

१५ “झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो ! वे तुम्हारे पास सरल भेड़ों के रूप में आते हैं किन्तु भीतर से वे खूँखार भेड़िये होते हैं।<sup>१६</sup> तुम उन्हें उन के कर्मों के परिणामों से पहचानोगे। कोई कँटीली झाड़ी से न तो अंगूर इकट्ठे कर पाता है और न ही गोखरू से अंजीर।<sup>१७</sup> ऐसे ही अच्छे पेड़ पर अच्छे फल लगते हैं किन्तु बुरे पेड़ पर तो बुरे फल ही लगते हैं।<sup>१८</sup> एक उत्तम वृक्ष बुरे फल नहीं उपजाता और न ही कोई बुरा पेड़ उत्तम फल पैदा कर सकता है।<sup>१९</sup> हर वह पेड़ जिस पर अच्छे फल नहीं लगते हैं, काट कर आग में झोंक दिया जाता है।<sup>२०</sup> इसलिए मैं तुम लोगों से फिर दोहरा कर कहता हूँ कि उन लोगों को तुम उनके कर्मों के परिणामों से पहचानोगे।

२१ “परभु-परभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता की इच्छा पर चलता है, वही उसमें प्रवेश पायेगा।<sup>२२</sup> उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे ‘परभु ! हे परभु ! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की ? क्या तेरे नाम से हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या हमने तेरे नाम से बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये ?’<sup>२३</sup> तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता, ‘अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग जाओ !’

एक बुद्धिमान और एक मूर्ख

(लूका ६ : ४७-४९)

२४ “इसलिये जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है और इन पर चलता है उसकी तुलना उस बुद्धिमान मनुष्य से होगी जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया,<sup>२५</sup> वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और यह सब उस मकान से टकराये पर वह गिरा नहीं। क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर रखी गयी थी।

२६ “किन्तु वह जो मेरे शब्दों को सुनता है पर उन पर आचरण नहीं करता, उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया।<sup>२७</sup> वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस मकान से टकराई, जिससे वह मकान पूरी तरह ढह गया।”

२८ परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह कर पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर लोगों की भीड़ को बड़ा अचरज हुआ।<sup>२९</sup> क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं के समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा दे रहा था।

यीशु का कोढ़ी को ठीक करना

(मरकुस १ : ४०-४५ ; लूका ५ : १२-१६)

५ यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा जन समूह उसके पीछे हो लिया।<sup>२</sup> वहीं एक कोढ़ी भी था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक कर बोला, “परभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है।”

३ इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को छुआ और कहा, “निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो जा !” और तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा।<sup>४</sup> फिर यीशु ने उससे कहा, “देख इस बारे में किसी से कुछ मत कहना। पर याजक के पास जा कर उसे अपने आप को दिखा। फिर मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।”

उससे सहायता के लिये विनती

(लूका ७ :१-१० ; यूहन्ना ४ :४३-५४)

५ फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेनानायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये विनती करता हुआ बोला, ६ “परभु, मेरा एक दास घर में बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार दिया है। उसे बहुत पीड़ा हो रही है।”

७ तब यीशु ने सेना नायक से कहा, “मैं आकर उसे अच्छा करूँगा।”

८ सेना नायक ने उत्तर दिया, “परभु मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे, बस मेरा दास ठीक हो जायेगा।

९ यह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के नीचे काम करता हूँ और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही हैं। जब मैं एक सिपाही से कहता हूँ ‘जा’ तो वह चला जाता है और दूसरे से कहता हूँ ‘आ’ तो वह आ जाता है। मैं अपने दास से कहता हूँ कि ‘यह कर’ तो वह उसे करता है।”

१० जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी में नहीं पाया। ११ मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से पूर्व और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में अपना-अपना स्थान ग्रहण करेंगे। १२ किन्तु राज्य की मूलभूत पूजा बाहर अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे लोग चीख-पुकार करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।”

१३ तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, “जा वैसा ही तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।” और तत्काल उस सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

यीशु का बहुतों को ठीक करना

(मरकुस १ :२९-३४ ; लूका ४ :३८-४१)

१४ यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। १५ सो यीशु ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार उतर गया। फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने लगी।

१६ जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे लोगों को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक ही आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं

को निकाल दिया। इस तरह उसने सभी रोगियों को चंगा कर दिया। १७ यह इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो :

“उसने हमारे रोगों को ले लिया और हमारे संतापों को ओढ़ लिया।” \*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

(लूका ९ :५७-६२)

१५ यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले किनारे चले जायें। १६ तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके पास आया और बोला, “गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं तेरे पीछे चलूँगा।”

२० इस पर यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों की खोह और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान नहीं है।”

२१ और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, “परभु, पहले मुझे जाकर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।”

२२ किन्तु यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ और मरे हुओं को अपने मुँहें आप गाड़ने दे।”

यीशु का तूफान को शांत करना

(मरकुस ४ :३५-४१ ; लूका ८ :२२-२५)

२३ तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी भी उसके साथ थे। २४ उसी समय झील में इतना भयंकर तूफान उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु यीशु सो रहा था। २५ तब उसके अनुयायी उसके पास पहुँचे और उसे जगाकर बोले, “परभु हमारी रक्षा कर। हम मरने को हैं।”

२६ तब यीशु ने उनसे कहा, “अरे अल्प विश्वासियों! तुम इतने डरे हुए क्यों हो?” तब उसने खड़े होकर तूफान और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा गयी।

२७ लोग चकित थे। उन्होंने कहा, “यह कैसा व्यक्ति है? आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते हैं।”

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

(मरकुस ५ :१-२० ; लूका ८ :२६-३९)

२८ जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश पहुँचा, तो उसे कब्रों से निकल कर आते

\* ८ :१७ उद्धरण यशायाह ५३ :४.

दो व्यक्ति मिले, जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि उस राह से कोई निकल तक नहीं सकता था।<sup>२९</sup> वे चिल्लाये, “हे परमेश्वर के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू यहाँ निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने आया है?”

<sup>३०</sup> वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़ चर रहा था।<sup>३१</sup> सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती करते हुए कहा, “यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है, तो हमें सुअरों के उस झुंड में भेज दे।”

<sup>३२</sup> सो यीशु ने उनसे कहा, “चले जाओ।” तब वे उन व्यक्तियों में से बाहर निकल आए और सुअरों में जा घुसे। फिर वह समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब कर मर गये।<sup>३३</sup> सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से दौड़ते हुए नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट आत्माओं से गूरस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ था, कह सुनाया।<sup>३४</sup> फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से मिलने बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला जाये।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

(मरकुस २ :१-१२ ; लूका ५ :१७-२६)

१ फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के पार अपने नगर आ गया।<sup>२</sup> लोग लकवे के एक रोगी को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने जब उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से कहा, “हिम्मत रख हे बालक, तेरे पाप को क्षमा किया गया।”

<sup>३</sup> तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे, “यह व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का अपमान करता है।”

<sup>४</sup> यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं, उनसे बोला, “तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने देते हो ?<sup>५-६</sup> अधिक सहज क्या है ? यह कहना कि ‘तेरे पाप क्षमा हुए’ या यह कहना ‘खड़ा हो और चल पड़ ?’ ताकि तुम यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति मनुष्य के पुत्र में है।” यीशु ने लकवे के मारे से कहा, “खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा।”

<sup>७</sup> वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर अपने घर चला गया।<sup>८</sup> जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो

वे श्रद्धामय विस्मय से भर उठे और परमेश्वर की स्तुति करने लगे जिसने मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

मत्ती (लेवी) यीशु के पीछे चलने लगा

(मरकुस २ :१३-१७ ; लूका ५ :२७-३२)

<sup>१</sup> यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की चौकी पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती था। यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ।” इस पर मत्ती खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

<sup>२</sup> ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों समेत भोजन कर रहा था<sup>३</sup> तो उसे फरीसियों ने देखा। वे यीशु के अनुयायियों से पूछने लगे, “तुम्हारा गुरु चुंगी वसूलने वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा है ?”

<sup>४</sup> यह सुनकर यीशु उनसे बोला, “स्वस्थ लोगों को नहीं बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता होती है।<sup>५</sup> इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या है, मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि दया चाहता हूँ।<sup>६</sup> मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।”

यीशु दूसरे यहूदी धर्म-नेताओं से भिन्न है

(मरकुस २ :१८-२२ ; लूका ५ :३३-३९)

<sup>१</sup> फिर बपतिस्मा देने वाले यहूदियों के शिष्य यीशु के पास गये और उससे पूछा, “हम और फरीसी बार-बार उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते ?”

<sup>२</sup> फिर यीशु ने उन्हें बताया, “क्या दूल्हे के साथी, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं ? किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा। फिर उस समय वे दुःखी होंगे और उपवास करेंगे।

<sup>३</sup> “बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को और अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़ जायेगी।<sup>४</sup> नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा जाता नहीं तो मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर बिखर जाता है। और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये लोग नया दाखरस, नयी मशकों में भरते हैं जिससे दाखरस और मशक दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।”

मृत लड़की को जीवन दान और  
रोगी स्त्री को चंगा करना

(मरकुस ५ : २१-४३ ; लूका ८ : ४०-५६)

१८ यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था, तभी यहूदी आराधनालय का एक मुखिया उसके पास आया और उसके सामने झुक कर विनती करते हुए बोला, “अभी-अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल कर यदि उस पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी उठेगी।”

१९ इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत उसके साथ चल दिया।

२० वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत अधिक रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट आयी और उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। २१ वह मन में सोच रही थी, “यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ, तो ठीक हो जाऊँगी।”

२२ मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, “बेटी, हिम्मत रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।” और वह स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

२३ उधर यीशु जब यहूदी धर्म-सभा के मुखिया के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की को मृत्यु पर शोक कर रहे हैं। २४ तब यीशु ने लोगों से कहा, “यहाँ से बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो रही है।” इस पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। २५ फिर जब भीड़ के लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने लड़की के कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी।

२६ इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल गया।

यीशु द्वारा बहुतों का उपचार

२७ यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति उसके पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे, “हे दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।”

२८ यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?” उन्होंने उत्तर दिया, “हाँ प्रभु!”

२९ इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा, “तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।” ३० और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, “इसके विषय में किसी को पता नहीं चलना चाहिये।”

३१ किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर इस समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

३२ जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा समाई हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता था। ३३ जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह गूँगा, जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने लगा। तब भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा, “इस्राएल में ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।”

३४ किन्तु फ़रीसी कह रहे थे, “वह दुष्टात्माओं को शैतान की सहायता से बाहर निकालता है।”

यीशु को लोगों पर खेद

३५ यीशु यहूदी आराधनालयों में उपदेश देता, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमता रहा था। ३६ यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होती हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता। ३७ तब यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, “तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मजदूर कम हैं। ३८ इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को काटने के लिये मजदूर भेजे।”

सुसमाचार के प्रचार के लिए प्रेरितों को भेजना

(मरकुस ३ : १३-१९ ; ६ : ७-१३ ;

लूका ६ : १२-१६ ; ९ : १-६)

१ सो यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाकर उन्हें दुष्टात्माओं को बाहर निकालने और हर तरह के रोगों और संतापों को दूर करने की शक्ति प्रदान की। २ उन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं:

सबसे पहला शमौन, (जो पतरस कहलाया),

और उसका भाई अंदिरयास,

जब्दी का बेटा याकूब

और उसका भाई यूहन्ना,

३ फिलिप्पुस,

बरतुल्मै,

थोमा,

कर वसूलने वाला मत्ती,

हलफै का बेटा याकूब

और तद्दै,

४ शमौन जिलौत \*

और यहूदा इस्करियोती (जिसने उसे धोखे से पकड़वाया था)।

५ यीशु ने इन बारहों को बाहर भेजते हुए आज्ञा दी, "गैर यहूदियों के क्षेत्र में मत जाओ तथा किसी भी सामरी नगर में प्रवेश मत करो।<sup>६</sup> बल्कि इस्राएल के परिवार की खोई हुई भेड़ों के पास ही जाओ।<sup>७</sup> और उन्हें उपदेश दो, स्वर्ग का राज्य निकट है।"<sup>८</sup> बीमारों को ठीक करो, मरे हुएों को जीवन दो, कोढ़ियों को चंगा करो और दुष्टात्माओं को निकालो। तुमने बिना कुछ दिये प्रभु की आशीष और शक्तियाँ पाई हैं, इसलिये उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुक्त भाव से बाँटो।<sup>९</sup> अपने पटुके में सोना, चाँदी या ताँबा मत रखो।<sup>१०</sup> यात्रा के लिए कोई झोला तक मत लो। कोई फालतू कुर्ता, चप्पल और छड़ी मत रखो क्योंकि मजदूर का उसके खाने पर अधिकार है।

११ "तुम लोग जब कभी किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता करो कि वहाँ विश्वासयोग्य कौन है। फिर तब तक वहीं ठहरे रहो जब तक वहाँ से चल न दो।<sup>१२</sup> जब तुम किसी घर-बार में जाओ तो परिवार के लोगों का सत्कार करते हुए कहो, 'तुम्हें शांति मिले।' <sup>१३</sup> यदि घर-बार के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके साथ साथ रहेगा और यदि वे इस योग्य न होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।<sup>१४</sup> यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो।<sup>१५</sup> मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस नगर की स्थिति से सदोम और अमोरा नगरों की स्थिति कहीं अच्छी होगी।

अपने प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

(मरकुस १३ : ९-१३ ; लूका २१ : १२-१७)

१६ "सावधान! मैं तुम्हें ऐसे ही बाहर भेज रहा हूँ जैसे भेड़ों को भेड़ियों के बीच में भेजा जाये। सौ साँपों की तरह चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो।<sup>१७</sup> लोगों से सावधान रहना क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी पंचायतों को सौंप देंगे और वे तुम्हें अपने आराधनालयों में कोड़ों से पिटावेंगे।<sup>१८</sup> तुम्हें शासकों और राजाओं के सामने पेश किया

जायेगा, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनकी और गैर यहूदियों को मेरे बारे में गवाही दो।<sup>१९</sup> जब वे तुम्हें पकड़ें तो चिंता मत करना कि, तुम्हें क्या कहना है और कैसे कहना है। क्योंकि उस समय तुम्हें बता दिया जायेगा कि तुम्हें क्या बोलना है।<sup>२०</sup> याद रखो बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे परम पिता की आत्मा तुम्हारे भीतर बोलेंगी।

२१ "भाई अपने भाईयों को पकड़वा कर मरवा डालेंगे, माता-पिता अपने बच्चों को पकड़वायेंगे और बच्चे अपने माँ-बाप के विरुद्ध हो जायेंगे। वे उन्हें मरवा डालेंगे।<sup>२२</sup> मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा।<sup>२३</sup> वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र दुबारा आ जाएगा।

२४ "शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही कोई दास अपने स्वामी से बड़ा होता है।<sup>२५</sup> शिष्य को गुरु के बराबर होने में और दास को स्वामी के बराबर होने में ही संतोष करना चाहिये। जब वे घर के स्वामी को ही बैल्जाबुल कहते हैं, तो उसके घर के दूसरे लोगों के साथ तो और भी बुरा व्यवहार करेंगे!

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं

(लूका १२ : २-७)

२६ "इसलिये उनसे डरना मत क्योंकि जो कुछ छिपा है, सब उजागर होगा। और हर वह वस्तु जो गुप्त है, प्रकट की जायेगी।<sup>२७</sup> मैं अँधेरे में जो कुछ तुमसे कहता हूँ, मैं चाहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो। मैंने जो कुछ तुम्हारे कानों में कहा है, तुम उसकी मकान की छतों पर चढ़कर, घोषणा करो।

२८ "उनसे मत डरो जो तुम्हारे शरीर को नष्ट कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी आत्मा को नहीं मार सकते। बस उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा को नरक में डालकर नष्ट कर सकता है।<sup>२९</sup> एक पैसे की दो चिड़ियाओं में से भी एक तुम्हारे परम पिता के जाने बिना और उसकी इच्छा के बिना धरती पर नहीं गिर सकती।<sup>३०</sup> और तुम्हारे तो सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ

\*१० : ४ जिलौत एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था। जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

१० : १५ सदोम और अमोरा ये उन दो नगरों के नाम हैं जिन्हें वहाँ के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिये प्रभु ने नष्ट कर दिया था।

है। <sup>३१</sup> इसलिये डरो मत तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक चिड़ियाओं से कहीं अधिक है।

यीशु में विश्वास

(लूका १२ : ८-९)

<sup>३२</sup> “जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम-पिता के सामने अपनाऊँगा। <sup>३३</sup> किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित परम-पिता के सामने नकाहूँगा।

यीशु के पीछे चलने से परेशानियाँ आ सकती हैं

(लूका १२ : ५१-५३ ; १४ : २६-२७)

<sup>३४</sup> “यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ। शांति नहीं बल्कि मैं तलवार का आवाहन करने आया हूँ। <sup>३५</sup> मैं यह करने आया हूँ :

‘पुत्र, पिता के विरोध में,  
पुत्री, माँ के विरोध में,  
बहू, सास के विरोध में होंगे।

<sup>३६</sup> मनुष्य के शत्रु, उसके अपने घर के ही लोग होंगे।’ \*

<sup>३७</sup> “जो अपने माता-पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। <sup>३८</sup> वह जो यातनाओं का अपना करूस स्वयं उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं है। <sup>३९</sup> वह जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है, अपने प्राण खो देगा। किन्तु जो मेरे लिये अपनी जान देगा, वह जीवन पायेगा।

जो आपका स्वागत करेगा  
परमेश्वर उन्हें आशीष देगा

(मरकुस ९ : ४१)

<sup>४०</sup> “जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे अपनाता है और जो मुझे अपनाता है, वह उस परमेश्वर को अपनाता है, जिसने मुझे भेजा है। <sup>४१</sup> जो किसी नबी को इसलिये अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही प्रतिफल मिलेगा जो कि नबी को मिलता है। और यदि तुम किसी भले आदमी का इसलिये स्वागत करते हो कि वह भला आदमी है, उसे सचमुच वही प्रतिफल मिलेगा जो किसी भले आदमी को मिलना चाहिए। <sup>४२</sup> और यदि कोई मेरे

इन भोले-भाले शिष्यों में से किसी एक को भी इसलिये एक गिलास टंडा पानी तक दे कि वह मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उसे इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं रहेगा।”

यीशु और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना

(लूका ७ : १८-३५)

**??** <sup>१</sup> अपने बारह शिष्यों को इस प्रकार समझा चुकने के बाद यीशु वहाँ से चल पड़ा और गलील प्रदेश के नगरों में उपदेश देता घूमने लगा।

<sup>२</sup> यूहन्ना ने जब जेल में यीशु के कामों के बारे में सुना तो उसने अपने शिष्यों के द्वारा संदेश भेजकर <sup>३</sup> पूछा कि “क्या तू वही है ‘जो आने वाला था’ या हम किसी और आने वाले की बात जोहें ?”

<sup>४</sup> उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “जो कुछ तुम सुन रहे हो, और देख रहे हो, जाकर यूहन्ना को बताओ कि, <sup>५</sup> अंधों को आँखें मिल रही हैं, लुले-लंगड़े चल पा रहे हैं, कोढ़ी चंगे हो रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और मरे हुए जिलाये जा रहे हैं। और दीन दुःखियों में सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है। <sup>६</sup> वह धन्य है जो मुझे अपना सकता है।”

<sup>७</sup> जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से जा रहे थे तो यीशु भीड़ में लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने लगा, “तुम लोग इस बियाबान में क्या देखने आये हो ? क्या कोई सरकंडा ? जो हवा में थरथरा रहा है। नहीं ! <sup>८</sup> तो फिर तुम क्या देखने आये हो ? क्या एक पुरुष जिसने बहुत अच्छे वस्त्र पहने हैं ? देखो जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं, वो तो राज भवनों में ही पाये जाते हैं। <sup>९</sup> तो तुम क्या देखने आये हो ? क्या कोई नबी ? हाँ मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे तुमने देखा है वह किसी नबी से कहीं ज्यादा है। <sup>१०</sup> यह वही है जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा है : ‘देख, मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ। वह तेरे लिये राह बनायेगा।’ <sup>११</sup>

<sup>१२</sup> “मैं तुझसे सत्य कहता हूँ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ। फिर भी स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है। <sup>१३</sup> बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के समय से आज तक स्वर्ग का राज्य भयानक आघातों को झेलता रहा है और हिंसा के बल पर इसे छीनने का प्रयत्न किया जाता रहा है।

\*१० : ३६ उद्धरण मीका ७ : ६

†११ : १० उद्धरण मलाकी ३ : १

१३ यूहन्ना के आने तक सभी भविष्यवक्ताओं और मूसा की व्यवस्था ने भविष्यवाणी की थी, १४ और यदि तुम व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ कहा, उसे स्वीकार करने को तैयार हो तो जिसके आने की भविष्यवाणी की गयी थी, यह यूहन्ना वही एलिय्याह है। १५ जो सुन सकता है, सुने!

१६ “आज की पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किन से करूँ? वे बाज़ारों में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कह रहे हैं,

१७ ‘हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी, पर तुम नहीं नाचे।

हमने शोकगीत गाये, किन्तु तुम नहीं रोये।’

१८ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया। जो न औरों की तरह खाता था और न ही पीता था। पर लोगों ने कहा था कि उस में दुष्टात्मा है। १९ फिर मनुष्य का पुत्र आया। जो औरों के समान ही खाता-पीता है, पर लोग कहते हैं, ‘इस आदमी को देखो, यह पेटू है, पियक्कड़ है। यह चुंगी वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।’ किन्तु बुद्धि की उत्तमता उसके कामों से सिद्ध होती है।”

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

(लूका १० :१३-१५)

२० फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं फिराया था। २१ अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे बैतसैदा “तुम में जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर और सैदा में किये जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से ही टाट के शोक वस्त्र ओढ़ कर और अपने शरीर पर राख मल १ कर खेद व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके होते। २२ किन्तु मैं तुम लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे अधिक सहने योग्य होगी। ३

२३ “और अरे कफ़रनहूम, क्या तू सोचता है कि तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो अधोलोक में नरक को जायेगा। क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में किये जाते तो वह नगर आज तक टिका रहता।

२४ पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से सदोम की हालत कहीं अच्छी होगी।”

यीशु को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

(लूका १० :२१-२२)

२५ उस अवसर पर यीशु बोला, “परम पिता, तू स्वर्ग और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और समझदार हैं, छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं उनके लिए प्रकट किया है। २६ हाँ परम पिता यह इसलिये हुआ, क्योंकि तूने इसे ही ठीक जाना।

२७ “मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया और वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को नहीं जानता। और हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है, जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।

२८ “हे थके-माँदे, बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। २९ मेरा जुआ लो और उसे अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझसे सीखो क्योंकि मैं सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये सुख-चैन मिलेगा। ३० क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल रहा हूँ, हल्का है।”

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

(मरकुस २ :२३-२८ ; लूका ६ :१-५)

१२ १ लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन अनाज के खेतों से होकर जा रहा था। उसके शिष्यों को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर खाने लगे। २ फरीसियों ने ऐसा होते देख कर कहा, “देख, तेरे शिष्य वह कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना मूसा की व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है।”

३ इस पर यीशु ने उनसे पूछा, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी, क्या किया था? ४ उसने परमेश्वर के घर में घुसकर परमेश्वर को चढ़ाई पवित्र रोटियाँ

१११ :२१ खुराजीन, बैतसैदा कफ़रनहूम झील गलील के किनारे बसे नगर जहाँ यीशु ने उपदेश दिये थे।

१११ :२१ राख मल उन दिनों लोग शोक व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के मोटे कपड़े पहना करते थे, और अपने शरीर पर राख मला करते थे।

१११ :२२ सूर और सैदा उन नगरों के नाम हैं जहाँ बहुत बुरे लोग रहा करते थे।



कैसे खाई थीं? यद्यपि उसको और उसके साथियों को उनका खाना मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध था। उनको केवल याजक ही खा सकते थे।<sup>५</sup> या मूसा की व्यवस्था में तुमने यह नहीं पढ़ा कि सब्त के दिन मन्दिर के याजक ही वास्तव में सब्त को विगाड़ते हैं। और फिर भी उन्हें कोई कुछ नहीं कहता।<sup>६</sup> किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ कोई है जो मन्दिर से भी बड़ा है।<sup>७</sup> यदि तुम शास्त्रों में जो लिखा है, उसे जानते कि, मैं लोगों में दया चाहता हूँ, पशु बलि नहीं तो तुम उन्हें दोषी नहीं ठहराते, जो निर्दोष हैं।

<sup>८</sup> “हाँ, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।”

यीशु द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

(मरकुस ३ : १-६ ; लूका ६ : ६-११)

<sup>१</sup> फिर वह वहाँ से चल दिया और यहूदी आराधनालय में पहुँचा।<sup>२</sup> वहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख चुका था। सो लोगों ने यीशु से पूछा, “मूसा के विधि के अनुसार सब्त के दिन किसी को चंगा करना, क्या उचित है?” उन्होंने उससे यह इसलिये पूछा था कि, वे उस पर दोष लगा सकें।

<sup>३</sup> किन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, “मानो, तुममें से किसी के पास एक ही भेड़ है, और वह भेड़ सब्त के दिन किसी गढ़े में गिर जाती है, तो क्या तुम उसे पकड़ कर बाहर नहीं निकालोगे? <sup>४</sup> फिर आदमी तो एक भेड़ से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। सो सब्त के दिन मूसा की व्यवस्था भलाई करने की अनुमति देती है।”

<sup>५</sup> तब यीशु ने उस सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा” और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। वह पूरी तरह अच्छा हो गया था। ठीक वैसे ही जैसा उसका दूसरा हाथ था।<sup>६</sup> फिर फरीसी वहाँ से चले गये और उसे मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की तरकीब सोचने लगे।

यीशु वही करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना

<sup>१५</sup> यीशु यह जान गया और वहाँ से चल पड़ा। बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। उसने उन्हें चंगा करते हुए <sup>१६</sup> चेतावनी दी कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न बतायें।<sup>१७</sup> यह इसलिये हुआ कि

भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा हो :

<sup>१८</sup> “यह मेरा सेवक है,

जिसे मैंने चुना है।

यह मेरा प्यारा है,

मैं इससे आनन्दित हूँ।

अपनी ‘आत्मा’ इस पर मैं रखूँगा

सब देशों के सब लोगों को यही न्याय घोषणा करेगा।

<sup>१९</sup> यह कभी नहीं चीखेगा या झगड़ेगा

लोग इसे गलियों कूचों में नहीं सुनेंगे।

<sup>२०</sup> यह झुके सरकंडे तक को नहीं तोड़ेगा,

यह बुझते दीपक तक को नहीं बुझाएगा, डटा रहेगा,

तब तक जब तक कि न्याय विजय न हो।

<sup>२१</sup> तब फिर सभी लोग अपनी आशाएँ उसमें बाँधेंगे बस केवल उसी नाम में।” \*

यीशु में परमेश्वर की शक्ति है

(मरकुस ३ : २०-३० ; लूका ११ : १४-२३ ; १२ : १०)

<sup>२२</sup> फिर यीशु के पास लोग एक ऐसे अन्धे को लाये जो गूंगा भी था क्योंकि उस पर दुष्ट आत्मा सवार थी। यीशु ने उसे चंगा कर दिया और इसीलिये वह गूंगा अंधा बोलने और देखने लगा।<sup>२३</sup> इस पर सभी लोगों को बहुत अचरज हुआ और वे कहने लगे, “क्या यह व्यक्ति दाऊद का पुत्र हो सकता है?”

<sup>२४</sup> जब फरीसियों ने यह सुना तो वे बोले, “यह दुष्टात्माओं को उनके शासक बैल्जाबुल के सहारे निकालता है।”

<sup>२५</sup> यीशु को उनके विचारों का पता चल गया। वह उनसे बोला, “हर वह राज्य जिसमें फूट पड़ जाती है, नष्ट हो जाता है। वैसे ही हर नगर या परिवार जिसमें फूट पड़ जाये टिका नहीं रहेगा।<sup>२६</sup> तो यदि शैतान ही अपने आप को बाहर निकाले फिर तो उसमें अपने ही विरुद्ध फूट पड़ गयी है। सो उसका राज्य कैसे बना रहेगा? <sup>२७</sup> और फिर यदि यह सच है कि मैं बैल्जाबुल के सहारे दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी किसके सहारे उन्हें बाहर निकालते हैं? सो तुम्हारे अपने अनुयायी ही सिद्ध करेंगे कि तुम अनुचित हो। <sup>२८</sup> मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर की आत्मा की शक्ति से निकालता हूँ। इससे यह सिद्ध है कि

\*१२ : २१ उद्धरण यशायाह ४२ : १-४

१२ : २४ बैल्जाबुल यह दुष्टात्माओं के राजा ‘शैतान’ का नाम है।

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट ही आ पहुँचा है।<sup>२९</sup> फिर कोई किसी बलवान के घर में घुस कर उसका माल कैसे चुरा सकता है, जब तक कि पहले वह उस बलवान को बाँध न दे। तभी वह उसके घर को लूट सकता है।<sup>३०</sup> जो मेरा साथ नहीं है, मेरा विरोधी है। और जो बिखरी हुई भेड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद नहीं करता है, वह उन्हें बिखरा रहा है।

<sup>३१</sup> “इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि सभी की हर निन्दा और पाप क्षमा कर दिये जायेंगे किन्तु आत्मा की निन्दा करने वाले को क्षमा नहीं किया जायेगा।<sup>३२</sup> कोइ मनुष्य के पुत्र के विरोध में यदि कुछ कहता है, तो उसे क्षमा किया जा सकता है, किन्तु पवित्र आत्मा के विरोध में कोई कुछ कहे तो उसे क्षमा नहीं किया जायेगा न इस युग में और न आने वाले युग में।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

(लूका ६ : ४३-४५)

<sup>३३</sup> “तुम लोग जानते हो कि अच्छा फल लेने के लिए तुम्हें अच्छा पेड़ ही लगाना चाहिये। और बुरे पेड़ से बुरा ही फल मिलता है। क्योंकि पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है।<sup>३४</sup> अरे ओ साँप के बच्चो! जब तुम बुरे हो तो अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? व्यक्ति के शब्द, जो उसके मन में भरा है, उसी से निकलते हैं।<sup>३५</sup> एक अच्छा व्यक्ति जो अच्छाई उसके मन में इकट्ठी है, उसी में से अच्छी बातें निकालता है। जबकि एक बुरा व्यक्ति जो बुराई उसके मन में है, उसी में से बुरी बातें निकालता है।<sup>३६</sup> किन्तु मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि न्याय के दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने हर व्यर्थ बोले शब्द का हिसाब देना होगा।<sup>३७</sup> तेरी बातों के आधार पर ही तुझे निर्दोष और तेरी बातों के आधार पर ही तुझे दोषी ठहराया जायेगा।”

यीशु से आश्चर्य चिन्ह की माँग

(मरकुस ८ : ११-१२ ; लूका ११ : २९-३२)

<sup>३८</sup> फिर कुछ यहूदी धर्म शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, “गुरु, हम तुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते देखना चाहते हैं।”

<sup>३९</sup> उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “इस युग के बुरे और दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं। भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं

दिया जायेगा।”<sup>४०</sup> और जैसे योना तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के पेट में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात धरती के भीतर रहेगा।<sup>४१</sup> न्याय के दिन नीनेवा के निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होंगे और उन्हें दोषी ठहरायेगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों ने योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो कोई योना से भी बड़ा मौजूद है!

<sup>४२</sup> “न्याय के दिन दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और उन्हें अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे छोर से सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और यहाँ तो कोई सुलेमान से भी बड़ा मौजूद है!

लोगों में शैतान

(लूका ११ : २४-२६)

<sup>४३</sup> “जब कोई दुष्टात्मा किसी व्यक्ति को छोड़ती है तो वह आराम की खोज में सूखी धरती ढूँढती फिरती है, किन्तु वह उसे मिल नहीं पाती।<sup>४४</sup> तब वह कहती है कि जिस घर को मैंने छोड़ा था, मैं फिर वहीं लौट जाऊँगी। सो वह लौटती है और उसे अब तक खाली, साफ सुथरा तथा सजा-सँवरा पाती है।<sup>४५</sup> फिर वह लौटती है और अपने साथ सात और दुष्टात्माओं को लाती है जो उससे भी बुरी होती हैं। फिर वे सब आकर वहाँ रहने लगती हैं। और उस व्यक्ति की दशा पहले से भी अधिक भयानक हो जाती है। आज की इस बुरी पीढ़ी के लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।”

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार

(मरकुस ३ : ३१-३५ ; लूका ८ : १९-२१)

<sup>४६</sup> वह अभी भीड़ के लोगों से बातें कर ही रहा था कि उसकी माता और भाई-बन्धु वहाँ आकर बाहर खड़े हो गये। वे उससे बातें करने को बाट जोह रहे थे।<sup>४७</sup> किसी ने यीशु से कहा, “सुन तेरी माँ और तेरे भाई-बन्धु बाहर खड़े हैं और तुझसे बात करना चाहते हैं।”

<sup>४८</sup> उत्तर में यीशु ने बात करने वाले से कहा, “कौन है मेरी माँ? कौन हैं मेरे भाई-बन्धु?”<sup>४९</sup> फिर उसने हाथ से अपने अनुयायियों की तरफ इशारा करते हुए कहा, “ये हैं मेरी माँ और मेरे भाई-बन्धु।<sup>५०</sup> हाँ स्वर्ग में स्थित मेरे पिता की इच्छा पर जो कोई चलता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।”

## किसान और बीज का दृष्टान्त

(मरकुस ४ : १-९ ; लूका ८ : ४-८)

**१३** १ उसी दिन यीशु उस घर को छोड़ कर झील के किनारे उपदेश देने जा बैठा। २ बहुत से लोग उसके चारों तरफ इकट्ठे हो गये। सो वह एक नाव पर चढ़ कर बैठ गया। और भीड़ किनारे पर खड़ी रही। ३ उसने उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें बतायीं।

उसने कहा, “एक किसान बीज बोने निकला। ४ जब वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के किनारे जा पड़े। चिड़ियाएँ आयीं और उन्हें चुग गयीं। ५ थोड़े बीज चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी बहुत उथली थी। बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो गहरी थी नहीं; ६ इसलिये जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे झुलस गये। और क्योंकि उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं थीं इसलिये वे सूख कर गिर गये। ७ बीजों का एक हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई, और उन्होंने उन पौधों को दबोच लिया। ८ पर थोड़े बीज जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी फसल देने लगे। फसल, जितना बोया गया था, उससे कोई तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना से भी ज्यादा हुई। ९ जो सुन सकता है, वह सुन ले।”

## दृष्टान्त-कथाओं का प्रयोजन

(मरकुस ४ : १०-१२ ; लूका ८ : ९-१०)

१० फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर उससे पूछा, “तू उनसे बातें करते हुए दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग क्यों करता है?”

११ उत्तर में उसने उनसे कहा, “स्वर्ग के राज्य के भेदों को जानने का अधिकार सिर्फ तुम्हें दिया गया है, उन्हें नहीं। १२ क्योंकि जिसके पास थोड़ा बहुत है, उसे और भी दिया जायेगा और उसके पास बहुत अधिक हो जायेगा। किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे जितना सा उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। १३ इसलिये मैं उनसे दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए बात करता हूँ। क्योंकि यद्यपि वे देखते हैं, पर वास्तव में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता, वे यद्यपि सुनते हैं पर वास्तव में न वे सुनते हैं, न समझते हैं। १४ इस प्रकार उन पर यशायाह की यह भविष्यवाणी खरी उतरती है :

‘तुम सुनोगे और सुनते ही रहोगे पर तुम्हारी समझ में कुछ भी न आयेगा, तुम बस देखते ही रहोगे

पर तुम्हें कुछ भी न सूझ पायेगा। १५ क्योंकि इनके हृदय जड़ता से भर गये।

इन्होंने अपने कान बन्द कर रखे हैं और अपनी आँखें मूँद रखी हैं

ताकि वे अपनी आँखों से कुछ भी न देखें और वे कान से कुछ न सुन पायें या

कि अपने हृदय से कभी न समझें और कभी मेरी ओर मुड़कर आयें और जिससे मैं उनका उद्धार करूँ।” \*

१६ किन्तु तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान भाग्यवान हैं क्योंकि वे देख और सुन सकते हैं। १७ मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों को देखना चाहते थे, उन्हें तुम देख रहे हो। वे उन्हें नहीं देख सके। और जिन बातों को वे सुनना चाहते थे, उन्हें तुम सुन रहे हो। वे उन्हें नहीं सुन सके।

## बीज बोने की दृष्टान्त-कथा का अर्थ

(मरकुस ४ : १३-२० ; लूका ८ : ११-१५)

१८ “तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त-कथा का अर्थ सुनो :

१९ “वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था, उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनता है और उसे समझता नहीं है तो दुष्ट आकर, उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाता है।

२० “वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आनन्द के साथ तत्काल ग्रहण भी करता है। २१ किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं तो वह जल्दी ही डगमगा जाता है।

२२ “काँटों में गिरे बीज का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता।

२३ “अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह सफलता बोये बीज से तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना तक होती है।”

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

२४ यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा रखी : “स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। २५ पर जब लोग सो रहे थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच जंगली बीज बोया गया। २६ जब गेहूँ में अंकुर निकले और उस पर बाले आयीं तो खरपतवार भी दिखने लगी। २७ तब खेत के मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा, ‘मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था ना ? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई ?’

२८ “तब उसने उनसे कहा, ‘यह किसी शत्रु का काम है।’

“उसके दासों ने उससे पूछा, ‘क्या तू चाहता है कि हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें ?’

२९ “वह बोला, ‘नहीं, क्योंकि जब तुम खरपतवार उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे। ३० जब तक फसल पके दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो, फिर कटाई के समय में फसल काटने वालों से कहूँगा कि पहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें जला दो, और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरे खेत में रख दो।”

कई अन्य दृष्टान्त-कथाएँ

(मरकुस ४ : ३०-३४ ; लूका १३ : १८-२१)

३१ यीशु ने उनके सामने और दृष्टान्त-कथाएँ रखी : “स्वर्ग का राज्य राई के छोटे से बीज के समान होता है, जिसे किसी ने लेकर खेत में बो दिया हो। ३२ यह बीज छोटे से छोटो होता है किन्तु बड़ा होने पर यह बाग के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। यह पेड़ बनता है और आकाश के पक्षी आकर इसकी शाखाओं पर शरण लेते हैं।”

३३ उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा और कही : “स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्तरी ने तीन बार आटे में मिलाया और तब तक उसे रख छोड़ा जब तक वह सब का सब खमीर नहीं हो गया।”

३४ यीशु ने लोगों से यह सब कुछ दृष्टान्त-कथाओं के द्वारा कहा। वास्तव में वह उनसे दृष्टान्त-कथाओं के बिना कुछ भी नहीं कहता था।

३५ ऐसा इसलिये था कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कुछ कहा था वह पूरा हो: परमेश्वर ने कहा,

“मैं दृष्टान्त कथाओं के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा। सृष्टि के आदिकाल से जो बातें छिपी रही हैं, उन्हें उजागर करूँगा।” \*

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

३६ फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला आया। तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, “खेत के खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।”

३७ उत्तर में यीशु बोला, “जिसने उत्तम बीज बोया था, वह है मनुष्य का पुत्र। ३८ और खेत यह संसार है। अच्छे बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार का अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान हैं। ३९ वह शत्रु जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई का समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले हैं स्वर्गदूत।

४० “ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को पाप के लिये प्रेरित करते हैं, ४२ इकट्ठा करके धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही रोना होगा। ४३ तब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले !

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

४४ “स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन जैसा है। जिसे किसी मनुष्य ने पाया और फिर उसे वहीं गाड़ दिया। वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने जो कुछ उसके पास था, जाकर बेच दिया और वह खेत मोल ले लिया।

४५ “स्वर्ग का राज्य ऐसे व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में हो। ४६ जब उसे एक अनमोल मोती मिला तो जाकर जो कुछ उसके पास था, उसने बेच डाला, और मोती मोल ले लिया।

मछली पकड़ने का जाल

४७ “स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह की मछलियाँ पकड़ी गयीं। ४८ जब वह जाल पूरा भर गया तो उसे किनारे

पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयीं किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयीं।<sup>१९</sup> सृष्टि के अन्त में ऐसा ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से पापियों को छाँट कर<sup>२०</sup> धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस रोना और दाँत पीसना होगा।<sup>१</sup>

<sup>२१</sup> यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, “तुम ये सब बातें समझते हो?”

उन्होंने उत्तर दिया, “हाँ!”

<sup>२२</sup> यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “देखो, इसीलिये हर धर्मशास्त्री जो परमेश्वर के राज्य को जानता है, एक ऐसे गृहस्वामी के समान है, जो अपने कठोर से नई-पुरानी वस्तुओं को बाहर निकालता है।<sup>१</sup>

यीशु का अपने देश लौटना

(मरकुस ६ :१-६ ; लूका ४ :१६-३०)

<sup>२३</sup> इन दृष्टान्त कथाओं को समाप्त करके वह वहाँ से चल दिया।<sup>२४</sup> और अपने देश आ गया। फिर उसने यहूदी आराधनालयों में उपदेश देना आरम्भ कर दिया। इससे हर कोई अचरज में पड़ कर कहने लगा, “इसे ऐसी सूझबूझ और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली? <sup>२५</sup> क्या यह वही बढई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माँ का नाम मरियम नहीं है? याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा इसी के तो भाई हैं न? <sup>२६</sup> क्या इसकी सभी बहनें हमारे ही बीच नहीं हैं? तो फिर उसे यह सब कहाँ से मिला?”<sup>२७</sup> सो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया।

फिर यीशु ने कहा, “किसी नबी का अपने गाँव और घर को छोड़ कर, सब आदर करते हैं।<sup>२८</sup> सो उनके अविश्वास के कारण उसने वहाँ अधिक आश्चर्य कर्म नहीं किये।

हेरोदेस का यीशु के बारे में सुनना

(मरकुस ६ :१४-२९ ; लूका ९ :७-१२)

**१४** उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब यीशु के बारे में सुना<sup>१</sup> तो उसने अपने सेवकों से कहा, “यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो मरे हुआँ में से जी उठा है। और इसीलिये ये शक्तियाँ उसमें काम कर रही हैं। जिनसे यह इन चमत्कारों को करता है।<sup>१</sup>

यूहन्ना की हत्या

<sup>२</sup> यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को बंदी बना, जंजीरों में बाँध, जेल में डाल दिया था।

यह उसने हिरोदियास के कहने पर किया था, जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी थी।<sup>३</sup> यूहन्ना प्रायः उससे कहा करता था कि “तुझे इसके साथ नहीं रहना चाहिये।<sup>४</sup> सो हेरोदेस उसे मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था क्योंकि लोग यूहन्ना को नबी मानते थे।

<sup>६</sup> पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया तो हिरोदियास की बेटी ने हेरोदेस और उसके मेहमानों के सामने नाच कर हेरोदेस को इतना प्रसन्न किया<sup>७</sup> कि उसने शपथ लेकर, वह जो कुछ चाहे, उसे देने का वचन दिया।<sup>८</sup> अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने कहा, “मुझे थाली में रख कर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का सिर दे।<sup>१</sup>

<sup>९</sup> यद्यपि राजा बहुत दुःखी था किन्तु अपनी शपथ और अपने मेहमानों के कारण उसने उसकी माँग पूरी करने का आदेश दे दिया।<sup>१०</sup> उसने जेल में यूहन्ना का सिर काटने के लिये आदमी भेजे।<sup>११</sup> सो यूहन्ना का सिर थाली में रख कर लाया गया और उसे लड़की को दे दिया गया। वह उसे अपनी माँ के पास ले गयी।<sup>१२</sup> तब यूहन्ना के अनुयायी आये और उन्होंने उसके धड़ को लेकर दफना दिया। और फिर उन्होंने आकर यीशु को बताया।

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

(मरकुस ६ :३०-४४ ; लूका

९ :१०-१७ ; यूहन्ना ६ :१-१४)

<sup>१३</sup> जब यीशु ने इसकी चर्चा सुनी तो वह वहाँ से नाव में किसी एकान्त स्थान पर अकेला चला गया। किन्तु जब भीड़ को इसका पता चला तो वे अपने नगरों से पैदल ही उसके पीछे हो लिये।<sup>१४</sup> यीशु जब नाव से बाहर निकल कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। उसे उन पर दया आयी और उसने उनके बीमारों को अच्छा किया।

<sup>१५</sup> जब शाम हुई तो उसके शिष्यों ने उसके पास आकर कहा, “यह सुनसान जगह है और बहुत देर भी हो चुकी है, सो भीड़ को विदा कर, ताकि वे गाँव में जाकर अपने लिये खाना मोल ले लें।<sup>१</sup>

<sup>१६</sup> किन्तु यीशु ने उनसे कहा, “इन्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। तुम इन्हें कुछ खाने को दो।<sup>१</sup>

<sup>१७</sup> उन्होंने उससे कहा, “हमारे पास पाँच रोटियों और दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है।<sup>१</sup>

<sup>१८</sup> यीशु ने कहा, “उन्हें मेरे पास ले आओ।<sup>१</sup>  
<sup>१९</sup> उसने भीड़ के लोगों से कहा कि वे घास पर बैठ जायें। फिर उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ

लेकर स्वर्ग की ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर रोटी के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने शिष्यों को दे दिया। शिष्यों ने वे टुकड़े लोगों में बाँट दिये।<sup>२०</sup> सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरी।<sup>२१</sup> स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ खाने वाले कोई पाँच हजार पुरुष थे।

### यीशु का झील पर चलना

(मरकुस ६ : ४५-५२ ; यूहन्ना ६ : १६-२१)

<sup>२२</sup> इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर चढ़ाया और जब तक वह भीड़ को विदा करे, उनसे गलीली की झील के पार अपने से पहले ही जाने को कहा।<sup>२३</sup> भीड़ को विदा करके वह अकेले में प्रार्थना करने को पहाड़ पर चला गया। साँझ होने पर वह वहाँ अकेला था।<sup>२४</sup> तब तक नाव किनारे से मीलों दूर जा चुकी थी और लहरों में थपेड़े खाती डगमगा रही थी। सामने की हवा चल रही थी।

<sup>२५</sup> सुबह कोई तीन और छः बजे के बीच यीशु झील पर चलता हुआ उनके पास आया।<sup>२६</sup> उसके शिष्यों ने जब उसे झील पर चलते हुए देखा तो वह घबराये हुए आपस में कहने लगे “यह तो कोई भूत है!” वे डर के मारे चीख उठे।

<sup>२७</sup> यीशु ने तत्काल उनसे बात करते हुए कहा, “हिम्मत रखो! यह मैं हूँ! अब और मत डरो।”

<sup>२८</sup> पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, “प्रभु, यदि यह तू है, तो मुझे पानी पर चलकर अपने पास आने को कह।”

<sup>२९</sup> यीशु ने कहा, “चला आ।”

पतरस नाव से निकल कर पानी पर यीशु की तरफ चल पड़ा।<sup>३०</sup> उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबराया। वह डूबने लगा और चिल्लाया, “प्रभु, मेरी रक्षा कर।”

<sup>३१</sup> यीशु ने तत्काल उसके पास पहुँच कर उसे सँभाल लिया और उससे बोला, “ओ अल्पविश्वासी, तूने संदेह क्यों किया?”

<sup>३२</sup> और वे नाव पर चढ़ आये। हवा थम गयी।

<sup>३३</sup> नाव पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, “तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।”

### यीशु का अनेक रोगियों को चंगा करना

(मरकुस ६ : ५३-५६)

<sup>३४</sup> सो झील पार करके वे गन्नेसरत के तट पर उतर गये।<sup>३५</sup> जब वहाँ रहने वालों ने यीशु को पहचाना तो उन्होंने उसके आने का समाचार आसपास सब कहीं भिजवा दिया। जिससे लोग-जो रोगी थे, उन सब को वहाँ ले आये<sup>३६</sup> और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र का बस किनारा ही छू लेने दे। और जिन्होंने छू लिया, वे सब पूरी तरह चंगे हो गये।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है

(मरकुस ७ : १-२३)

**१५** ? फिर कुछ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री यरूशलेम से यीशु के पास आये और उससे पूछा, “तेरे अनुयायी हमारे पुरखों के रीति-रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते? वे खाना खाने से पहले अपने हाथ क्यों नहीं धोते?”

<sup>३</sup> यीशु ने उत्तर दिया, “अपने रीति-रिवाजों के कारण तुम परमेश्वर के विधि को क्यों तोड़ते हो? “क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था ‘तू अपने माता-पिता का आदर कर’ \*और ‘जो कोई अपने पिता या माता का अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।’<sup>१५</sup> किन्तु तुम कहते हो जो कोई अपने पिता या अपनी माता से कहे, ‘क्योंकि मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को अर्पित कर चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।’<sup>६</sup> इस तरह उसे अपने माता पिता का आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम अपने रीति-रिवाजों के कारण परमेश्वर के आदेश को नकारते हो।<sup>७</sup> ओ ढोंगियों, तुम्हारे बारे में यशायाह ने ठीक ही भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था :

“यह लोग केवल हठों से मेरा आदर करते हैं; पर इनका मन मूझ से सदा दूर रहता है।

“मेरे लिए उनकी उपासना व्यर्थ है,

क्योंकि उनकी शिक्षा केवल लोगों द्वारा बनाए हुए सिद्धान्त हैं।”<sup>८</sup>

<sup>१०</sup> उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, “सुनो और समझो कि <sup>११</sup> मनुष्य के मुख

\*१५ : ४ उद्धरण निर्गमन २० : १२ ; व्यवस्था विवरण ५ : १६

†१५ : ४ उद्धरण निर्गमन २१ : १७

‡१५ : ९ उद्धरण यशायाह २९ : १३

के भीतर जो जाता है वह उसे अपवित्र नहीं करता, बल्कि उसके मुँह से निकला हुआ शब्द उसे अपवित्र करता है।”

१३ तब यीशु के शिष्य उसके पास आये और बोले, “क्या तुझे पता है कि तेरी बात का फरीसियों ने बहुत बुरा माना है?”

१३ यीशु ने उत्तर दिया, “हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्ग में स्थित पिता की ओर से नहीं लगाया गया है, उखाड़ दिया जायेगा। १४ उन्हें छोड़ो, वे तो अन्धों के अंधे नेता हैं। यदि एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखाता है, तो वे दोनों ही गढ़ में गिरते हैं।”

१५ तब पतरस ने उससे कहा, “हमें अपवित्रता सम्बन्धी दृष्टान्त का अर्थ समझा।”

१६ यीशु बोला, “क्या तुम अब भी नहीं समझते? १७ क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ किसी के मुँह में जाता है, वह उसके पेट में पहुँचता है और फिर पखाने में निकल जाता है? १८ किन्तु जो मनुष्य के मुँह से बाहर आता है, वह उसके मन से निकलता है। यही उसको अपवित्र करता है। १९ क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, दुराचार, चोरी, झूठ और निन्दा जैसी सभी बुराईयों मन से ही आती हैं। २० ये ही हैं जिनसे कोई अपवित्र बनता है। बिना हाथ धोए खाने से कोई अपवित्र नहीं होता।”

गौर यहूदी स्त्री की सहायता

(मरकुस ७:२४-३०)

२१ फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर सूर और सैदा की ओर चल पड़ा। २२ वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी और चिल्लाने लगी, “हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझे पर दया कर। मेरी पुत्री पर दुष्ट आत्मा बुरी तरह सवार है।”

२३ यीशु ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, सो उसके शिष्य उसके पास आये और विनती करने लगे, “यह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है, इसे दूर हटा।”

२४ यीशु ने उत्तर दिया, “मुझे केवल इस्राएल के लोगों की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं भेजा गया है।”

२५ तब उस स्त्री ने यीशु के सामने झुक कर विनती की, “हे प्रभु, मेरी रक्षा कर।”

२६ उत्तर में यीशु ने कहा, “यह उचित नहीं है कि बच्चों का खाना लेकर उसे घर के कुत्तों के आगे डाल दिया जाये।”

२७ वह बोली, “यह ठीक है प्रभु, किन्तु अपने स्वामी की मेज़ से गिरे हुए चूरे में से थोड़ा बहुत तो घर के कुत्ते ही खा ही लेते हैं।”

२८ तब यीशु ने कहा, “स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है। जो तू चाहती है, पूरा हो।” और तत्काल उसकी बेटी अच्छी हो गयी।

यीशु का बहुतों को अच्छा करना

२९ फिर यीशु वहाँ से चल पड़ा और झील गलील के किनारे पहुँचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ कर उपदेश देने बैठ गया।

३० बड़ी-बड़ी भीड़ लँगड़े-लूलों, अंधों, अपाहिजों, बहरे-गुंगों और ऐसे ही दूसरे रोगियों को लेकर उसके पास आने लगी। भीड़ ने उन्हें उसके चरणों में धरती पर डाल दिया। और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। ३१ इससे भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गुंगे बोल रहे हैं, अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े-लूले चल फिर रहे हैं और अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हज़ार से अधिक को भोजन

(मरकुस ८:१-१०)

३२ तब यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और कहा, “मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है क्योंकि ये लोग तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं और इनके पास कुछ खाने को भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा ही नहीं भोजना चाहता क्योंकि हो सकता है कि कहीं वे रास्ते में ही मूर्च्छित होकर न गिर पड़ें।”

३३ तब उसके शिष्यों ने कहा, “इतनी बड़ी भीड़ के लिए ऐसी बियाबान जगह में इतना खाना हमें कहाँ से मिलेगा?”

३४ तब यीशु ने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”

उन्होंने कहा, “सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ।”

३५ यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया ३६ और रोटियाँ तोड़ीं और अपने शिष्यों को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे लोगों में बाँट दिया। ३७ लोग तब तक खाते रहे जब तक थक न गये। फिर उसके शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से सात टोक़रियाँ भरीं। ३८ औरतों और बच्चों को छोड़कर वहाँ चार हज़ार

पुरुषों ने भोजन किया। ३९ भीड़ को विदा करके यीशु नाव में आ गया और मगदन को चला गया।

यहूदी नेताओं की चाल

(मरकुस ८ :११-१३ ; लूका १२ :५४-५६)

**१६** १ फिर फरीसी और सद्की यीशु के पास आये। वे उसे परखना चाहते थे सो उन्होंने उससे कोई चमत्कार करने को कहा, ताकि पता लग सके कि उसे परमेश्वर की अनुमति मिली हुई है।

२ उसने उत्तर दिया, “सूरज छुपने पर तुम लोग कहते हो, ‘आज मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है’<sup>३</sup> और सूरज उगने पर तुम कहते हो, ‘आज अंधड़ आयेगा क्योंकि आसमान धुंधला और लाल है।’ तुम आकाश के लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के लक्षणों को नहीं पढ़ सकते।<sup>४</sup> अरे दुष्ट और दुराचारी पीढ़ी के लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें सिवाय योना के चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं दिखाया जायेगा।” फिर वह उन्हें छोड़कर चला गया।

यीशु की चेतावनी

(मरकुस ८ :१४-२१)

५ यीशु के शिष्य झील के पार चले आये, पर वे रोटी लाना भूल गये।<sup>६</sup> इस पर यीशु ने उनसे कहा, “चौकन्ने रहो! और फरीसियों और सद्कियों के खमीर से बचे रहो।”

७ वे आपस में सोच विचार करते हुए बोले, “हो सकता है, उसने यह इसलिये कहा क्योंकि हम कोई रोटी साथ नहीं लाये।”

८ वे क्या सोच रहे हैं, यीशु यह जानता था, सो वह बोला, “ओ अल्प विश्वासियों, तुम आपस में अपने पास रोटी नहीं होने के बारे में क्यों सोच रहे हो?<sup>९</sup> क्या तुम अब भी नहीं समझते या याद करते कि पाँच हजार लोगों के लिए वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थीं?<sup>१०</sup> और क्या तुम्हें याद नहीं चार हजार के लिए वे सात रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थीं? क्या नहीं समझते कि

मैंने तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा? मैंने तो तुम्हें फरीसियों और सद्कियों के खमीर से बचने को कहा है।”

१२ तब वे समझ गये कि रोटी के खमीर से नहीं बल्कि उसका मतलब फरीसियों और सद्कियों की शिक्षाओं से बचे रहने से है।

यीशु मसीह है

(मरकुस ८ :२७-३० ; लूका ९ :१८-२१)

१३ जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो उसने अपने शिष्यों से पूछा, “लोग क्या कहते हैं, कि मैं कौन हूँ?”\*

१४ वे बोले, “कुछ कहते हैं कि तू बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है, और दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह<sup>१</sup> है और कुछ अन्य कहते हैं कि तू यिर्मयाह<sup>२</sup> या भविष्यवक्ताओं में से कोई एक है।”

१५ यीशु ने उनसे कहा, “और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?”

१६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “तू मसीह है, साक्षात् परमेश्वर का पुत्र।”

१७ उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “योना के पुत्र शमौन! तू धन्य है क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं, बल्कि स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने दर्शाई है।<sup>१८</sup> मैं कहता हूँ कि तू पतरस है। और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा। मृत्यु की शक्ति<sup>१९</sup> उस पर प्रबल नहीं होगी।<sup>२०</sup> मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे रहा हूँ। ताकि धरती पर जो कुछ तू बाँधे, वह परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग में बाँधा जाये और जो कुछ तू धरती पर छोड़े, वह स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जाये।”

२० फिर उसने अपने शिष्यों को कड़ा आदेश दिया कि वे किसी को यह ना बतायें कि वह मसीह है।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

(मरकुस ८ :३१-९ ; लूका ९ :२२-२७)

२१ उस समय यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि, उसे यरूशलेम जाना चाहिये। जहाँ उसे यहूदी

\*१६ :१३ मैं कौन हूँ शाब्दिक, “मनुष्य का पुत्र।”

१६ :१४ एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था जो यीशु से सैकड़ों साल पहले हुआ था और लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

१६ :१४ यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता जो यीशु से सैकड़ों साल पहले लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

१६ :१८ मृत्यु की शक्ति शाब्दिक, “मृत्यु के द्वार।”



धर्मशास्त्रियों, बुजुर्ग यहूदी नेताओं और प्रमुख याजकों द्वारा यातनाएँ पहुँचा कर मरवा दिया जायेगा। फिर तीसरे दिन वह मेरे हुआँ में से जी उठेगा।

२२ तब पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसकी आलोचना करता हुआ उससे बोला, “हे प्रभु! परमेश्वर तुझ पर दया करे। तेरे साथ ऐसा कभी न हो!”

२३ फिर यीशु उसकी तरफ मुड़ा और बोला, “पतरस, मेरे रास्ते से हट जा। अरे शैतान! तू मेरे लिए एक अड़चन है। क्योंकि तू परमेश्वर की तरह नहीं लोगों की तरह सोचता है।”

२४ फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आपको भुलाकर, अपना क्रूस स्वयं उठाये और मेरे पीछे हो ले। २५ जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना होगा। किन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा, वही उसे बचाएगा। २६ यदि कोई अपना जीवन देकर सारा संसार भी पा जाये तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है? २७ मनुष्य का पुत्र दत्तों सहित अपने परमपिता की महिमा के साथ आने वाला है। जो हर किसी को उसके कर्मों का फल देगा। २८ मैं तुम से सत्य कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते न देख लें।”

तीन शिष्यों को मूसा और  
एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन  
(मरकुस ९ :२-१३ ; लूका ९ :२८-३६)

**१७** १ छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे पहाड़ पर गया। २ वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और उसके वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश। ३ फिर अचानक मूसा और एलिय्याह उनके सामने प्रकट हुए और यीशु से बात करने लगे।

४ यह देखकर पतरस यीशु से बोला, “प्रभु, अच्छा है कि हम यहाँ हैं। यदि तू चाहे तो मैं यहाँ तीन मंडप बना दूँ एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।”

५ पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और

बादल से आकाशवाणी हुई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!”

६ जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि धरती पर औंधे मुँह गिर पड़े। ७ तब यीशु उनके पास गया और उन्हें छूते हुए बोला, “डरो मत, खड़े होवो।” ८ जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो वहाँ बस यीशु को ही पाया।

९ जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आदेश दिया, “जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी को मत बताना जब तक मनुष्य के पुत्र को मेरे हुआँ में से फिर जिला न दिया जाये।”

१० फिर उसके शिष्यों ने उससे पूछा, “यहूदी धर्मशास्त्री फिर क्यों कहते हैं, एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?”

११ उत्तर देते हुए उसने उनसे कहा, “एलिय्याह आ रहा है, वह हर वस्तु को व्यवस्थित कर देगा। १२ किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह तो अब तक आ चुका है। पर लोगों ने उसे पहचाना नहीं। और उसके साथ जैसा चाहा वैसा किया। उनके द्वारा मनुष्य के पुत्र को भी वैसे ही सताया जाने वाला है।” १३ तब उसके शिष्य समझे कि उसने उनसे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के बारे में कहा था।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

(मरकुस ९ :१४-२९ ; लूका ९ :३७-४३a)

१४ जब यीशु भीड़ में वापस आया तो एक व्यक्ति उसके पास आया और उसे दंडवत प्रणाम करके बोला, १५ “हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर। उसे मिर्गी आती है। वह बहुत तड़पता है। वह आग में या पानी में अक्सर गिरता पड़ता रहता है। १६ मैं उसे तेरे शिष्यों के पास लाया, पर वे उसे अच्छा नहीं कर पाये।”

१७ उत्तर में यीशु ने कहा, “अरे भटके हुए अविश्वासी लोगों, मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा? कितने समय मैं यँ ही तुम्हारे साथ रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” १८ फिर यीशु ने दुष्टात्मा को आदेश दिया और वह उसमें से बाहर निकल आयी। और वह लड़का तत्काल अच्छा हो गया।

१९ फिर उसके शिष्यों ने अकेले में यीशु के पास जाकर पूछा, “हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकाल पाये?”

२० यीशु ने उन्हें बताया, “क्योंकि तुममें विश्वास की कमी है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यदि तुममें राई के बीज जितना भी विश्वास हो

तो तुम इस पहाड़ से कह सकते हो 'यहाँ से हट कर वहाँ चला जा' और वह चला जायेगा। तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी नहीं होगा।" २१ \*

यीशु का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

(मरकुस ९ :३०-३२ ; लूका ९ :४३b-४५)

२२ जब यीशु के शिष्य आए और उसके साथ गलील में मिले तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के द्वारा ही पकड़वाया जाने वाला है, २३ जो उसे मार डालेगा। किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" इस पर यीशु के शिष्य बहुत व्याकुल हुए।

कर का भुगतान

२४ जब यीशु और उसके शिष्य कफ़रनहूम में आये तो मन्दिर का दो दरम कर वसूल करने वाले पतरस के पास आये और बोले, "क्या तेरा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?"

२५ पतरस ने उत्तर दिया, "हाँ, वह देता है।"

और घर में चला आया। पतरस से बोलने के पहले ही यीशु बोल पड़ा, उसने कहा, "शमौन, तेरा क्या विचार है? धरती के राजा किससे चुंगी और कर लेते हैं? स्वयं अपने बच्चों से या दूसरों के बच्चों से?"

२६ पतरस ने उत्तर दिया, "दूसरे के बच्चों से।"

तब यीशु ने उससे कहा, "यानी उसके बच्चों को छूट रहती है।" २७ पर हम उन लोगों को नाराज़ न करे इसलिये झील पर जा और अपना काँटा फेंक और फिर जो पहली मछली पकड़ में आये उसका मुँह खोलना तुझे चार दरम का सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।"

सबसे बड़ा कौन

(मरकुस ९ :३३-३७ ; लूका ९ :४६-४८)

१८ तब यीशु के शिष्यों ने उसके पास आकर पूछा, "स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?"

२ तब यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उसे उनके सामने खड़ा करके कहा, ३ "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जब तक कि तुम लोग बदलोगे नहीं और बच्चों के समान नहीं बन जाओगे, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे। ४ इसलिये अपने

आपको जो कोई इस बच्चे के समान नम्र बनाता है, वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है।

५ "और जो कोई ऐसे बालक जैसे व्यक्ति को मेरे नाम में स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है।

पापों के परिणाम के बारे में यीशु की चेतावनी

(मरकुस ९ :४२-४८ ; लूका १७ :१-२)

६ "किन्तु जो मुझमें विश्वास करने वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी के रास्ते की बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में एक चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में डुबो दिया जाये। ७ बाधाओं के कारण मुझे संसार के लोगों के लिए खेद है, पर बाधाएँ तो आयेंगी ही किन्तु खेद तो मुझे उस पर है जिसके द्वारा बाधाएँ आती हैं।

८ "इसलिए यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तेरे लिए बाधा बने तो उसे काट फेंक, क्योंकि स्वर्ग में बिना हाथ या बिना पैर के अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए अधिक अच्छा है; बजाये इसके कि दोनों हाथों और दोनों पैरों समेत तुझे नरक की कभी न बुझने वाली आग में डाल दिया जाये। ९ यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा है; बजाये इसके कि दोनों आँखों समेत तुझे नरक की आग में डाल दिया जाए।

खोई भेड़ की दृष्टान्त कथा

(लूका १५ :३-७)

१० "सो देखो, मेरे इन मासूम अनुयायियों में से किसी को भी तुच्छ मत समझना। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके रक्षक स्वर्गदूतों की पहुँच स्वर्ग में मेरे परम पिता के पास लगातार रहती है। ११ †

१२ "बता तू क्या सोचता है? यदि किसी के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाये तो क्या वह दूसरी निन्यानवे भेड़ों को पहाड़ी पर ही छोड़ कर उस एक खोई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? १३ वह निश्चय ही जाएगा और जब उसे वह मिल जायेगी, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ तो वह दूसरी निन्यानवे की बजाये-जो खोई नहीं थीं, इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। १४ इसी तरह

\*१७ :२१ कुछ यूनानी प्रतियों में पद २१ जोड़ा गया है: "ऐसी दुष्टात्मा केवल प्रार्थना या उपवास करने से निकलती है।"

†१८ :११ कुछ यूनानी प्रतियों में पद ११ जोड़ा गया है: "मनुष्य का पुत्र भटके हुआ के उद्धार के लिये आया।" देखें लूका १९ :१०

स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता क्या नहीं चाहता कि मेरे इन अबोध अनुयायियों में से कोई एक भी न भटके।

जब कोई तेरा बुरा करे

(लूका १७:३)

१५ “यदि तेरा बंधु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता। यदि वह तेरी सुन ले, तो तूने अपने बंधु को फिर जीत लिया। १६ पर यदि वह तेरी न सुने तो दो एक को अपने साथ ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सके। १७ यदि वह उन को भी न सुने तो कलीसिया को बता दे। और यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो फिर तू उस से ऐसे व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या कर वसूलने वाला हो।

१८ “मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे स्वर्ग में प्रभु के द्वारा बाँधा जायेगा और जिस किसी को तुम धरती पर छोड़ोगे स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जायेगा। १९ मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि इस धरती पर यदि तुम में से कोई दो सहमत हो कर स्वर्ग में स्थित मेरे पिता से कुछ माँगेंगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा २० क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ हूँ।”

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त कथा

२१ फिर पतरस यीशु के पास गया और बोला, “प्रभु, मुझे अपने भाई को कितनी बार अपने प्रति अपराध करने पर भी क्षमा कर देना चाहिए? यदि वह सात बार अपराध करे तो भी?”

२२ यीशु ने कहा, “न केवल सात बार, बल्कि मैं तुझे बताता हूँ तुझे उसे सात बार के सत्तर गुना तक क्षमा करते रहना चाहिये।”

२३ “सो स्वर्ग के राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने की सोची थी। २४ जब उसने हिसाब लेना शुरू किया तो उसके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जिस पर दसियों लाख रूपया निकलता था। २५ पर उसके पास चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी घर वाली, उसके बाल बच्चों और जो कुछ उसका माल असबाब है, सब समेत बेच कर कर्ज चुका दिया जाये।

२६ “तब उसका दास उसके पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा, ‘धीरज धरो, मैं सब कुछ चुका दूँगा।’ २७ इस पर स्वामी को उस दास पर दया आ गयी। उसने उसका कर्जा माफ करके उसे छोड़ दिया।

२८ “फिर जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रूपये देने थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका गला घोटते हुए बोला, ‘जो तुझे मेरा देना है, लौटा दे!’

२९ “इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, ‘धीरज धर, मैं चुका दूँगा।’

३० “पर उसने मना कर दिया। इतना ही नहीं उसने उसे तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न चुका दे, जेल भी भिजवा दिया। ३१ दूसरे दास इस सारी घटना को देखकर बहुत दुःखी हुए। और उन्होंने जो कुछ घटा था, सब अपने स्वामी को जाकर बता दिया।

३२ “तब उसके स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, ‘अरे नीच दास, मैंने तेरा वह सारा कर्ज माफ कर दिया क्योंकि तूने मुझ से दया की भीख माँगी थी। ३३ क्या तुझे भी अपने साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिये थी जैसे मैंने तुम पर दया की थी?’ ३४ सो उसका स्वामी बहुत बिगड़ा और उसे तब तक दण्ड भुगताने के लिए सौंप दिया जब तक समूचा कर्ज चुकता न हो जाये।

३५ “सो जब तक तुम अपने भाई-बंदों को अपने मन से क्षमा न कर दो मेरा स्वर्गीय परम पिता भी तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेगा।”

तलाक

(मरकुस १०:१-१२)

१९ ये बातें कहने के बाद वह गलील से लौट कर यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार चला गया। २ एक बड़ी भीड़ वहाँ उसके पीछे हो ली, जिसे उसने चंगा किया।

३ उसे परखने के जतन में कुछ फ़रीसी उसके पास पहुँचे और बोले, “क्या यह उचित है कि कोई अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है?”

४ उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, “क्या तुमने शास्त्र में नहीं पढ़ा कि जगत को रचने वाले ने प्रारम्भ में, उन्हें एक स्त्री और एक पुरुष के रूप

में रचा था? \*५ और कहा था 'इसी कारण अपने माता-पिता को छोड़ कर पुरुष अपनी पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक शरीर होकर रहेगा।' †६ सो वे दो नहीं रहते बल्कि एक रूप हो जाते हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य को अलग नहीं करना चाहिये।”

७ वे बोले, “फिर मूसा ने यह क्यों निर्धारित किया है कि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। शर्त यह है कि वह उसे तलाक नामा लिख कर दे।”

५ यीशु ने उनसे कहा, “मूसा ने यह विधान तुम लोगों के मन की जड़ता के कारण दिया था। किन्तु प्रारम्भ में ऐसी रीति नहीं थी। ९ तो मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यभिचार को छोड़कर अपनी पत्नी को किसी और कारण से त्यागता है और किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता है तो वह व्यभिचार करता है।”

१० इस पर उसके शिष्यों ने उनसे कहा, “यदि एक स्त्री और एक पुरुष के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी को ब्याह ही नहीं करना चाहिये।”

११ फिर यीशु ने उनसे कहा, “हर कोई तो इस उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकता। इसे बस वे ही ग्रहण कर सकते हैं जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है। १२ कुछ ऐसे हैं जो अपनी माँ के गर्भ से ही नपुंसक पैदा हुए हैं। और कुछ ऐसे हैं जो लोगों द्वारा नपुंसक बना दिये गये हैं। और अंत में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के कारण विवाह नहीं करने का निश्चय किया है। जो इस उपदेश को ले सकता है ले।”

यीशु की आशीष: बच्चों को

(मरकुस १० :१३-१६ ; लूका १८ :१५-१७)

१३ फिर लोग कुछ बालकों को यीशु के पास लाये कि वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे और उनके लिए प्रार्थना करे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें डाँटा। १४ इस पर यीशु ने कहा, “बच्चों को रहने दो, उन्हें मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है।” १५ फिर उसने बच्चों के सिर पर अपना हाथ रखा और वहाँ से चल दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

(मरकुस १० :१७-३१ ; लूका १८ :१८-३०)

१६ वही एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और बोला, “गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?”

१७ यीशु ने उनसे कहा, “अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझसे क्यों पूछ रहा है? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो तू आदेशों का पालन कर।”

१८ उसने यीशु से पूछा, “कौन से आदेश?”

तब यीशु बोला, “हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत कर। झूठी गवाही मत दे। १९ अपने पिता और अपनी माता का आदर कर” \*और ‘जैसे तू अपने आप को प्यार करता है, वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।’ †”

२० युवक ने यीशु से पूछा, “मैंने इन सब बातों का पालन किया है। अब मुझ में किस बात की कमी है?”

२१ यीशु ने उनसे कहा, “यदि तू संपूर्ण बनना चाहता तो जा और जो कुछ तेरे पास है, उसे बेचकर धन गरीबों में बाँट दे ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके। फिर आ और मेरे पीछे हो ले।”

२२ किन्तु जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह दुःखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

२३ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है। २४ हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि किसी धनवान व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने से एक ऊँट का सूई के नकुए से निकल जाना आसान है।”

२५ जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो अचरज से भरकर पूछा, “फिर किस का उद्धार हो सकता है?”

२६ यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, “मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।”

२७ उत्तर में तब पतरस ने उनसे कहा, “देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं। सो हमें क्या मिलेगा?”

\*१९ :४ उद्धरण उत्पत्ति १ :२७, ५ :२

†१९ :५ उद्धरण उत्पत्ति २ :२४

‡१९ :१९ उद्धरण निर्गमन २० :१२-१६ ; व्यवस्था विवरण ५ :१६-२०

§१९ :१९ देखें लैव्यव्यवस्था १९ :१८

२८ यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्राप्ती सिंहासन पर विराजेगा तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बाहर सिंहासनों पर बैठकर परमेश्वर के लोगों का न्याय करोगे। २९ और मेरे लिए जिसने भी घर-बार या भाईयों या बहनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को त्याग दिया है, वह सौ गुणा अधिक पायेगा और अनन्त जीवन का भी अधिकारी बनेगा। ३० किन्तु बहुत से जो अब पहले हैं, अन्तिम हो जायेंगे और जो अन्तिम हैं, पहले हो जायेंगे।"

मजदूरों की दृष्टान्त-कथा

२० "स्वर्ग का राज्य एक ज़मींदार के समान है जो सुबह सवेरे अपने अंगूर के बगीचों के लिये मजदूर लाने को निकला। २ उसने चाँदी के एक रुपया पर मजदूर रख कर उन्हें अपने अंगूर के बगीचे में काम करने भेज दिया।

३ "नौ बजे के आसपास ज़मींदार फिर घर से निकला और उसने देखा कि कुछ लोग बाज़ार में इधर उधर यूँ ही बेकार खड़े हैं। ४ तब उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में जाओ, मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा, दूँगा।' ५ सो वे भी बगीचे में काम करने चले गये।

"फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के आसपास, उसने वैसा ही किया। ६ कोई पाँच बजे वह फिर अपने घर से गया और कुछ लोगों को बाज़ार में इधर उधर खड़े देखा। उसने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ दिन भर बेकार ही क्यों खड़े रहते हो?'

७ "उन्होंने उससे कहा, 'क्योंकि हमें किसी ने मजदूरी पर नहीं रखा।'

"उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में चले जाओ।'

८ "जब साँझ हुई तो अंगूर के बगीचे के मालिक ने अपने प्रधान कर्मचारी को कहा, 'मजदूरों को बुलाकर अंतिम मजदूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे उन तक सब की मजदूरी चुका दो।'

९ "सो वे मजदूर जो पाँच बजे लगाये थे, आये और उनमें से हर किसी को चाँदी का एक रुपया मिला। १० फिर जो पहले लगाये गये थे, वे आये। उन्होंने सोचा उन्हें कुछ अधिक मिलेगा पर उनमें से भी हर एक को एक ही चाँदी का रुपया मिला। ११ रुपया तो उन्होंने ले लिया पर ज़मींदार से शिकायत करते हुए १२ उन्होंने कहा, 'जो बाद में लगे थे, उन्होंने बस एक घंटा काम किया और तूने

हमें भी उतना ही दिया जितना उन्हें। जबकि हमने सारे दिन चमचमाती धूप में मेहनत की।'

१३ "उत्तर में उनमें से किसी एक से ज़मींदार ने कहा, 'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या हमने तय नहीं किया था कि मैं तुम्हें चाँदी का एक रुपया दूँगा? १४ जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मैं सबसे बाद में रखे गये इस को भी उतनी ही मजदूरी देना चाहता हूँ जितनी तुझे दे रहा हूँ। १५ क्या मैं अपने धन का जो चाहूँ वह करने का अधिकार नहीं रखता? मैं अच्छा हूँ क्या तू इससे जलता है?'

१६ "इस प्रकार अंतिम पहले हो जायेंगे और पहले अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

(मरकुस १०:३२-३४; लूका १८:३१-३४)

१७ जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ यरूशलेम जा रहा था तो वह उन्हें एक तरफ़ ले गया और चलते चलते उनसे बोला, १८ "सुनो, हम यरूशलेम पहुँचने को हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों के हाथों सौंप दिया जायेगा। वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहरायेंगे। १९ फिर उसका उपहास करवाने और कोड़े लगवाने को उसे ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे। फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।"

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

(मरकुस १०:३५-४५)

२० फिर जब्दी के बेटों की माँ अपने बेटों समेत यीशु के पास पहुँची और उसने झुक कर प्रार्थना करते हुए उससे कुछ माँगा।

२१ यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती है?"

वह बोली, "मुझे वचन दे कि मेरे ये दोनों बेटे तेरे राज्य में एक तेरे दाहिनी ओर और दूसरा तेरे बाईं ओर बैठे।"

२२ यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह प्याला पी सकते हो, जिसे मैं पीने वाला हूँ?"

उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं।"

२३ यीशु उनसे बोला, "निश्चय ही तुम वह प्याला पीयोगे। किन्तु मेरे दाएँ और बायें बैठने का अधिकार देने वाला मैं नहीं हूँ। यहाँ बैठने का अधिकार तो उनका है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है।"

२४ जब बाकी दस शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों भाईयों पर बहुत बिगड़े। २५ तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि गैर यहूदी राजा, लोगों पर अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं और उनके महत्वपूर्ण नेता, लोगों पर अपना अधिकार जताना चाहते हैं। २६ किन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिये। बल्कि तुम में जो बड़ा बनना चाहे, तुम्हारा सेवक बने। २७ और तुम में से जो कोई पहला बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास बनना होगा। २८ तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही होना चाहिये जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती देने आया है।”

अंधों को आँखें

(मरकुस १० : ४६-५२ ; लूका १८ : ३५-४३)

२९ जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे एक बड़ी भीड़ यीशु को पीछे हो ली। ३० वहाँ सड़क किनारे दो अंधे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, वे चिल्लाये, “प्रभु, दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!”

३१ इस पर भीड़ ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को कहा पर वे और अधिक चिल्लाये, “प्रभु! दाऊद के पुत्र हम पर दया कर!”

३२ फिर यीशु रुका और उनसे बोला, “तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?”

३३ उन्होंने उससे कहा, “प्रभु, हम चाहते हैं कि हम देख सकें।”

३४ यीशु को उन पर दया आयी। उसने उनकी आँखों को छुआ, और तुरंत ही वे फिर देखने लगे। वे उसके पीछे हो लिए।

यीशु का यरूशलेम में भव्य प्रवेश

(मरकुस ११ : १-११ ; लूका

१९ : २८-३८ ; यूहन्ना १२ : १२-१९)

२१ यीशु और उसके अनुयायी जब यरूशलेम के पास जैतून पर्वत के निकट बैतफगे पहुँचे तो यीशु ने अपने दो शिष्यों को २ यह आदेश देकर भेजा कि “अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ जाते ही तुम्हें एक गधी बाँधी मिलेगी। उसके साथ उसका बच्चा भी होगा। उन्हें बाँध कर मेरे

पास ले आओ। ३ यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो उससे कहना, ‘प्रभु को इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।’”

४ ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का यह वचन पूरा हो :

५ “सिओन की नगरी से कहो,

देख तेरा राजा तेरे पास आ रहा है।

वह विनयपूर्ण है, वह गधी पर सवार है,

हाँ गधी के बच्चे पर जो एक श्रमिक पशु का बच्चा है।” \*

६ सो उसके शिष्य चले गये और वैसा ही किया जैसा उन्हें यीशु ने बताया था। ७ वे गधी और उसके बछेरे को ले आये। और उन पर अपने वस्त्र डाल दिये क्योंकि यीशु को बैठना था। ८ भीड़ में बहुत से लोगों ने अपने वस्त्र राह में बिछा दिये और दूसरे लोग पेड़ों से टहनियाँ काट लाये और उन्हें मार्ग में बिछा दिया। ९ जो लोग उनके आगे चल रहे थे और जो लोग उनके पीछे चल रहे थे सब पुकार कर कह रहे थे :

“होशान्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र!

‘जो आ रहा है प्रभु के नाम पर धन्य है।’ †

प्रभु जो स्वर्ग में विराजा।”

१० सो जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समूचे नगर में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, “यह कौन है?”

११ लोग ही जवाब दे रहे थे, “यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।”

यीशु मन्दिर में

(मरकुस ११ : १५-१९ ; लूका

१९ : ४५-४८ ; यूहन्ना २ : १३-२२)

१२ फिर यीशु मन्दिर के अहाते में आया और उसने मन्दिर के अहाते में जो लोग खरीद-बिकरी कर रहे थे, उन सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन-देन करने वालों की चौकियों को उलट दिया और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। १३ वह उनसे बोला, “शास्त्र कहते हैं, ‘मेरा घर प्रार्थना-गृह कहलायेगा।’ किन्तु तुम इसे डाकुओं का अड्डा बना रहे हो।” †

१४ मन्दिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले उसके पास आये। जिन्हें उसने चंगा कर दिया। १५ तब प्रमुख

\*२१ : ५ उद्धरण जकर्याह ९ : ९

†२१ : ९ उद्धरण भजन संहिता ११८ : २५-२६

‡२१ : १३ उद्धरण यशायाह ५६ : ७

§२१ : १३ उद्धरण यिर्म. ७ : ११

याजकों और यहूदी धर्मशास्त्रियों ने उन अद्भुत कामों को देखा जो उसने किये थे और मन्दिर में बच्चों को ऊँचे स्वर में कहते सुना : “होशन्ना ! दाऊद का वह पुत्र धन्य है।”

१६ तो वे बहुत क्रोधित हुए। और उससे पूछा, “तू सुनता है वे क्या कह रहे हैं ?”

यीशु ने उनसे कहा, “हाँ, सुनता हूँ। क्या धर्मशास्त्र में तुम लोगों ने नहीं पढ़ा, ‘तूने बालकों और दूध पीते बच्चों तक से स्तुति करवाई है।’” \*

१७ फिर उन्हें वही छोड़ कर वह यरूशलेम नगर से बाहर बैतनिय्याह को चला गया। जहाँ उसने रात बिताई।

### विश्वास की शक्ति

(मरकुस ११ : १२-१४, २०-२४)

१५ अगले दिन अलख सुबह जब वह नगर को वापस लौट रहा था तो उसे भूख लगी। १६ राह किनारे उसने अंजीर का एक पेड़ देखा सो वह उसके पास गया, पर उसे उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ नहीं मिला। सो उसने पेड़ से कहा, “तुझ पर आगे कभी फल न लगे !” और वह अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया।

२० जब शिष्यों ने वह देखा तो अचरज के साथ पूछा, “यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया ?”

२१ यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। यदि तुम में विश्वास है और तुम संदेह नहीं करते तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने अंजीर के पेड़ का किया। बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, उठ और अपने आप को सागर में डुबो दे” तो वही हो जायेगा। २२ और प्रार्थना करते हुए तुम जो कुछ माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।”

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

(मरकुस ११ : २७-३३ ; लूका २० : १-८)

२३ जब यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो प्रमुख याजकों और यहूदी बुजुर्गों ने पास जाकर उससे पूछा, “ऐसी बातें तू किस अधिकार से करता है ? और यह अधिकार तुझे किसने दिया ?”

२४ उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं ये बातें किस अधिकार

से करता हूँ। २५ बताओ यहून्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला ? परमेश्वर से या मनुष्य से ?”

वे आपस में विचार करते हुए कहने लगे, “यदि हम कहते हैं ‘परमेश्वर से’ तो यह हमसे पूछेगा ‘फिर तुम उस पर विश्वास क्यों नहीं करते ?’ २६ किन्तु यदि हम कहते हैं ‘मनुष्य से’ तो हमें लोगों का डर है क्योंकि वे यहून्ना को एक नवी मानते हैं।”

२७ सो उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, “हमें नहीं पता।”

इस पर यीशु उनसे बोला, “अच्छा तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये बातें मैं किस अधिकार से करता हूँ।”

### यहूदियों के लिए एक दृष्टांत कथा

२८ “अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते हो ? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह बड़े के पास गया और बोला, ‘पुत्र आज मेरे अंगूरों के बगीचे में जा और काम कर।’

२९ “किन्तु पुत्र ने उत्तर दिया, ‘मेरी इच्छा नहीं है’ पर बाद में उसका मन बदल गया और वह चला गया।

३० “फिर वह पिता दूसरे बेटे के पास गया और उससे भी वैसे ही कहा। उत्तर में बेटे ने कहा, ‘जी हाँ,’ मगर वह गया नहीं।

३१ “बताओ इन दोनों में से जो पिता चाहता था, किसने किया ?”

उन्होंने कहा, “बड़े ने।”

यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कर वसूलने वाले और वेश्याएँ परमेश्वर के राज्य में तुमसे पहले जायेंगे। ३२ यह मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यहून्ना तुम्हें जीवन का सही रास्ता दिखाने आया और तुमने उसमें विश्वास नहीं किया। किन्तु कर वसूलने वालों और वेश्याओं ने उसमें विश्वास किया। तुमने जब यह देखा तो भी बाद में न मन फिराया और न ही उस पर विश्वास किया।

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

(मरकुस १२ : १-१२ ; लूका २० : १-१९)

३३ “एक और दृष्टान्त सुनो : एक ज़मींदार था। उसने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर बाड़ लग दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ लगाने को एक गड्ढा खोदा

\*२१ : १६ उद्धरण भजन संहिता ८ : २ (यूनानी संस्करण)।

और रखवाली के लिए एक मीनार बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर चला गया।<sup>३४</sup> जब अंगूर उतारने का समय आया तो बगीचे के मालिक ने किसानों के पास अपने दास भेजे ताकि वे अपने हिस्से के अंगूर ले आयें।

<sup>३५</sup> “किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया। किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और किसी को तो मार ही डाला।<sup>३६</sup> एक बार फिर उसने पहले से और अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उनके साथ भी वैसा ही बर्ताव किया।<sup>३७</sup> बाद में उसने उनके पास अपने बेटे को भेजा। उसने कहा, ‘वे मेरे बेटे का तो मान रखेंगे ही।’

<sup>३८</sup> “किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो वे आपस में कहने लगे, ‘यह तो उसका उत्तराधिकारी है, आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार हथिया लें।’<sup>३९</sup> सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के बाहर धकेल दिया और मार डाला।

<sup>४०</sup> “तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का मालिक आयेगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?”

<sup>४१</sup> उन्होंने उससे कहा, “क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे को दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने पर उसे उसका हिस्सा देंगे।”

<sup>४२</sup> यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने शास्त्र का वह वचन नहीं पढ़ा :

‘जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने बेकार समझा, वही कोने का सबसे अधिक महत्वपूर्ण पत्थर बन गया?’

ऐसा प्रभु के द्वारा किया गया जो हमारी दृष्टि में अद्भुत है।\*’

<sup>४३</sup> “इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ परमेश्वर का राज्य तुमसे छीन लिया जायेगा और वह उन लोगों को दे दिया जायेगा जो उसके राज्य के अनुसार बर्ताव करेंगे।<sup>४४</sup> जो इस चट्टान पर गिरेगा, टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और यदि यह चट्टान किसी पर गिरेगी तो उसे रौंद डालेगी।”

<sup>४५</sup> जब प्रमुख याजकों और फरीसियों ने यीशु की दृष्टान्त कथाएँ सुनीं तो वे ताड़ गये कि वह उन्हीं के बारे में कह रहा था।<sup>४६</sup> सो उन्होंने उसे पकड़ने का जतन किया किन्तु वे लोगों से डरते थे क्योंकि लोग यीशु को नबी मानते थे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त कथा

(लूका १४ :१५-२४)

**२२** एक बार फिर यीशु उनसे दृष्टान्त कथाएँ कहने लगा। वह बोला,<sup>२</sup> “स्वर्ग का राज्य उस राजा के जैसा है जिसने अपने बेटे के ब्याह पर दावत दी।<sup>३</sup> राजा ने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को बुला लायें जिन्हें विवाह भोज पर न्योता दिया गया है। किन्तु वे लोग नहीं आये।

<sup>४</sup> “उसने अपने सेवकों को फिर भेजा, उसने कहा कि जिन लोगों को विवाह भोज पर बुलाया गया है उनसे कहो, ‘देखो मेरी दावत तैयार है। मेरे साँड़ों और मोटे ताजे पशुओं को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार है। ब्याह की दावत में आ जाओ।’

<sup>५</sup> “पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे चले गये। कोई अपने खेतों में काम करने चला गया तो कोई अपने काम धन्धे पर।<sup>६</sup> और कुछ लोगों ने तो राजा के सेवकों को पकड़ कर उनके साथ मार-पीट की और उन्हें मार डाला।<sup>७</sup> सो राजा ने क्रोधित होकर अपने सैनिक भेजे। उन्होंने उन हत्यारों को मौत के घाट उतार दिया और उनके नगर में आग लगा दी।

<sup>८</sup> “फिर राजा ने सेवकों से कहा, ‘विवाह भोज तैयार है किन्तु जिन्हें बुलाया गया था, वे अयोग्य सिद्ध हुए।<sup>९</sup> इसलिये गली के नुककड़ों पर जाओ और तुम जिसे भी पाओ ब्याह की दावत पर बुला लाओ।’<sup>१०</sup> फिर सेवक गलियों में गये और जो भी भले बुरे लोग उन्हें मिले वे उन्हें बुला लाये। और शादी का महल मेहमानों से भर गया।

<sup>११</sup> “किन्तु जब मेहमानों को देखने राजा आया तो वहाँ उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने थे।<sup>१२</sup> राजा ने उससे कहा, ‘हे मित्र, विवाह के वस्त्र पहने बिना तू यहाँ भीतर कैसे आ गया?’ पर वह व्यक्ति चुप रहा।<sup>१३</sup> इस पर राजा ने अपने सेवकों से कहा, ‘इसके हाथ-पाँव बाँध कर बाहर अन्धेरे में फेंक दो। जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते होंगे।’

<sup>१४</sup> “क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।”



यहूदी नेताओं की चाल

(मरकुस १२ :१३-१७ ; लूका २० :२०-२६)

१५ फिर फरीसियों ने जाकर एक सभा बुलाई, जिससे वे इस बात का आपस में विचार-विमर्श कर सकें कि यीशु को उसकी अपनी ही कही किसी बात में कैसे फँसाया जा सकता है। १६ उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, “गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है तू सचमुच परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। और तब, कोई क्या सोचता है, तू इसकी चिंता नहीं करता क्योंकि तू किसी व्यक्ति की हैसियत पर नहीं जाता। १७ सो हमें बता तेरा क्या विचार है कि सम्राट कैसर को कर चुकाना उचित है कि नहीं ?”

१८ यीशु उनके बुरे इरादे को ताड़ गया, सो वह बोला, “ओ कपटियों! तुम मुझे क्यों परखना चाहते हो ? १९ मुझे कोई दीनार दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।” सो वे उसके पास दीनार ले आये। २० तब उसने उनसे कहा, “इस पर किसकी मूरत और लेख खुदे हैं ?”

२१ उन्होंने उससे कहा, “महाराजा कैसर के।”

तब उसने उनसे कहा, “अच्छा तो फिर जो महाराजा कैसर का है, उसे महाराजा कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को।”

२२ यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़ कर चले गये।

सद्कियों की चाल

(मरकुस १२ :१८-२७ ; लूका २० :२७-४०)

२३ उसी दिन (कुछ सद्की जो पुनरुत्थान को नहीं मानते थे) उसके पास आये। और उससे पूछा, २४ “गुरु, मूसा के उपदेश के अनुसार यदि बिना बाल बच्चों के कोई, मर जाये तो उसका भाई, निकट सम्बन्धी होने के नाते उसकी विधवा से ब्याह करे और अपने भाई का वंश बढ़ाने के लिये संतान पैदा करे। २५ अब मानो हम सात भाई हैं। पहले का ब्याह हुआ और बाद में उसकी मृत्यु हो गयी। फिर क्योंकि उसके कोई संतान नहीं हुई, इसलिये उसके भाई ने उसकी पत्नी को अपना लिया। २६ जब तक कि सातों भाई मर नहीं गये दूसरे, तीसरे भाईयों के साथ भी वैसा ही हुआ

२७ और सब के बाद वह स्त्री भी मर गयी। २८ अब हमारा पूछना यह है कि अगले जीवन में उन सातों में से वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उसे सातों ने ही अपनाया था ?”

२९ उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, “तुम भूल करते हो क्योंकि तुम शास्त्रों को और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। ३० तुम्हें समझाना चाहिये कि पुनर्जीवन में लोग न तो शादी करेंगे और न ही कोई शादी में दिया जायेगा। बल्कि वे स्वर्ग के दूतों के समान होंगे। ३१ इसी सिलसिले में तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर ने मरे हुआओं के पुनरुत्थान के बारे में जो कहा है, क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा ? उसने कहा था, ३२ मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ, और याकूब का परमेश्वर हूँ। ३३ वह मरे हुआओं का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।”

३३ जब लोगों ने यह सुना तो उसके उपदेश पर वे बहुत चकित हो गए।

सबसे बड़ा आदेश

(मरकुस १२ :२८-३४ ; लूका १० :२५-२८)

३४ जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से सद्कियों को चुप करा दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए ३५ उनमें से एक यहूदी धर्मशास्त्री ने यीशु को फँसाने के उद्देश्य से उससे पूछा, ३६ “गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ा आदेश कौन सा है ?”

३७ यीशु ने उससे कहा, “सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये। ३८ यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। ३९ फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है : अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है। ४० सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ इन्हीं दो आदेशों पर टिके हैं।”

क्या मसीह दाऊद का पुत्र  
या दाऊद का प्रभु है ?

(मरकुस १२ :३५-३७ ; लूका २० :४१-४४)

४१ जब फरीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछा, ४२ “मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो कि वह किसका बेटा है ?”

उन्होंने उससे कहा, “दाऊद का।”

\*२२ :३२ उद्धरण निर्गमन ३ :६

†२२ :३७ उद्धरण व्यवस्था विवरण ६ :५

‡२२ :३९ देखें लैब्य. १९ :१८

४३ यीशु ने उनसे पूछा, "फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहते हुए यह क्यों कहा था : ४४ 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा : मेरे दाहिने हाथ बैठ कर शासन कर, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे अधीन न कर दूँ।'"\*

४५ फिर जब दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहा तो वह उसका बेटा कैसे हो सकता है?"

४६ उत्तर में कोई भी उससे कुछ नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ।

यीशु द्वारा यहूदी धर्म-नेताओं की आलोचना

(मरकुस १२ :३८-४० ; लूका

११ :३७-५२ ; २० :४५-४७)

२३ यीशु ने फिर अपने शिष्यों और भीड़ से कहा।<sup>२</sup> उसने कहा, "यहूदी धर्म शास्त्री और फरीसी मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी हैं।<sup>३</sup> इसलिए जो कुछ वे कहें उस पर चलना और उसका पालन करना। किन्तु जो वे करते हैं वह मत करना। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे बस कहते हैं पर करते नहीं हैं।<sup>४</sup> वे लोगों के कंधों पर इतना बोझ लाद देते हैं कि वे उसे उठा कर चल ही न सकें और लोगों पर दबाव डालते हैं कि वे उसे लेकर चलें। किन्तु वे स्वयं उनमें से किसी पर भी चलने के लिए पाँव तक नहीं हिलाते।

५ "वे अच्छे कर्म इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें देखें। वास्तव में वे अपने ताबीज़ों और पोशाकों की झालरों को इसलिये बड़े से बड़ा करते रहते हैं ताकि लोग उन्हें धर्मात्मा समझें।<sup>६</sup> वे उत्सवों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान पाना चाहते हैं। आराधनालयों में उन्हें प्रमुख आसन चाहिये।<sup>७</sup> बाज़ारों में वे आदर के साथ नमस्कार कराना चाहते हैं। और चाहते हैं कि लोग उन्हें 'रब्बी' कहकर संबोधित करें।

८ "किन्तु तुम लोगों से अपने आप को 'रब्बी' मत कहलवाना क्योंकि तुम्हारा सच्चा गुरु तो बस एक है। और तुम सब केवल भाई बहन हो।<sup>९</sup> धरती पर लोगों को तुम अपने में से किसी को भी 'पिता' मत कहने देना। क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, और वह स्वर्ग में है।<sup>१०</sup> न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी कहने देना क्योंकि

तुम्हारा स्वामी तो बस एक ही है और वह मसीह है।<sup>११</sup> तुममें सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति वही होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा।<sup>१२</sup> जो अपने आपको उठायेगा, उसे नीचा किया जाएगा और जो अपने आपको नीचा बनाएगा, उसे उठाया जायेगा।

१३ "अरे कपटी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो। न तो तुम स्वयं उसमें प्रवेश करते हो और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।<sup>१४</sup>†

१५ "अरे कपटी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम किसी को अपने पंथ में लाने के लिए धरती और समुद्र पार कर जाते हो। और जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी दुगुना नरक का पात्र बना देते हो!

१६ "अरे अंधे रहनुमाओं! तुम्हें धिक्कार है जो कहते हो यदि कोई मन्दिर की सौगंध खाता है तो उसे उस शपथ को रखना आवश्यक नहीं है किन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाता है तो उसे उस शपथ का पालन आवश्यक है।<sup>१७</sup> अरे अंधे मूर्खों! बड़ा कौन है? मन्दिर का सोना या वह मन्दिर जिसने उस सोने को पवित्र बनाया।

१८ "तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी की सौगंध खाता है तो कुछ नहीं,' किन्तु यदि कोई वेदी पर रखे चढ़ावे की सौगंध खाता है तो वह अपनी सौगंध से बँधा है।<sup>१९</sup> अरे अंधो! कौन बड़ा है? वेदी पर रखा चढ़ावा या वह वेदी जिससे वह चढ़ावा पवित्र बनता है? <sup>२०</sup> इसलिये यदि कोई वेदी की शपथ लेता है तो वह वेदी के साथ वेदी पर जो रखा है, उस सब की भी शपथ लेता है।<sup>२१</sup> वह जो मन्दिर है, उसकी भी शपथ लेता है। वह मन्दिर के साथ जो मन्दिर के भीतर है, उसकी भी शपथ लेता है।<sup>२२</sup> और वह जो स्वर्ग की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो उस सिंहासन पर विराजमान हैं उसकी भी शपथ लेता है।

२३ "अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक कि अपने पुदीने, सौंफ और जीरे तक के दसवें भाग को परमेश्वर को देते हो। फिर भी तुम व्यवस्था की महत्वपूर्ण बातों यानी न्याय, दया और विश्वास का तिरस्कार करते हो। तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये बिना इनका पालन

\*२२ :४४ उद्धरण भजन संहिता ११० :१

†२३ :१४ कुछ यूनानी परतियों में पद १४ जोड़ा गया है : "अरे कपटी, यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों तुम विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हो। दिखाने के लिए लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हो। इसके लिये तुम्हें कड़ा दण्ड मिलेगा।" देखें मरकुस १२ :४० ; लूका २० :४७

करना चाहिये था। २४ ओ अंधे रहनुमाओं! तुम अपने पानी से मच्छर तो छानते हो पर ऊँट को निगल जाते हो।

२५ “अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम अपनी कटोरियाँ और थालियाँ बाहर से तो धोकर साफ करते हो पर उनके भीतर जो तुमने छल कपट या अपने लिये रियासत में पाया है, भरा है। २६ अरे अंधे फरीसियों! पहले अपने प्याले को भीतर से माँजो ताकि भीतर के साथ वह बाहर से भी स्वच्छ हो जाये।

२७ “अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम लिपी-पुती समाधि के समान हो जो बाहर से तो सुंदर दिखती हैं किन्तु भीतर से मरे हुएओं की हड्डियों और हर तरह की अपवित्रता से भरी होती हैं। २८ ऐसे ही तुम बाहर से तो धर्मात्मा दिखाई देते हो किन्तु भीतर से छलकपट और बुराई से भरे हुए हो।

२९ “अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों! तुम नबियों के लिये स्मारक बनाते हो और धर्मात्माओं की कबरों को सजाते हो। ३० और कहते हो कि ‘यदि तुम अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों को मारने में उनका हाथ नहीं बताते।’ ३१ मतलब यह कि तुम मानते हो कि तुम उनकी संतान हो जो नबियों के हत्यारे थे। ३२ सो जो तुम्हारे पुरखों ने शुरु किया, उसे पूरा करो।

३३ “अरे साँपों और नागों की संतानों! तुम कैसे सोचते हो कि तुम नरक भोगने से बच जाओगे। ३४ इसलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों और गुरुओं को भेज रहा हूँ। तुम उनमें से बहुतों को मार डालोगे और बहुतों को क्रूस पर चढ़ाओगे। कुछ एक को तुम अपनी आराधनालयों में कोड़े लगवाओगे और एक नगर से दूसरे नगर उनका पीछा करते फिरोगे।

३५ “परिणामस्वरूप निर्दोष हाबील से लेकर बिरक्याह के बेटे जकरयाह तक जिसे तुमने मन्दिर के गर्भ गृह और वेदी के बीच मार डाला था, हर निरपराध व्यक्ति की हत्या का दण्ड तुम पर होगा। ३६ मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ इस सब कुछ के लिये इस पीढ़ी के लोगों को दंड भोगना होगा।”

यरूशलेम के लोगों पर यीशु को खेद

(लूका १३:३४-३५)

३७ “ओ यरूशलेम, यरूशलेम! तू वह है जो नबियों की हत्या करता है और परमेश्वर के भेजे दूतों को पत्थर मारता है। मैंने कितनी बार चाहा है कि जैसे कोई मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती है वैसे ही मैं तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ। किन्तु तुम लोगों ने नहीं चाहा। ३८ अब तेरा मन्दिर पूरी तरह उजड़ जायेगा। ३९ सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ तुम मुझे तब तक फिर नहीं देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: ‘धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!’”

यीशु द्वारा मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

(मार्कुस १३:१-३१; लूका २१:५-३३)

२४ ? मन्दिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से होकर जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मन्दिर के भवन दिखाते उसके पास आये। २ इस पर यीशु ने उनसे कहा, “तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।”

३ यीशु जब जैतून पर्वत पर बैठा था तो एकांत में उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, “हमें बता यह कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?”

४ उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “सावधान! तुम लोगों को कोई छलने न पाये। ५ मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे ‘मैं मसीह हूँ’ और वे बहुतों को छलेंगे। ६ तुम पास के युद्धों की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम घबराना मत! ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं आया है। ७ हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा। अकाल पड़ेंगे। हर कहीं भूचाल आयेंगे। ८ किन्तु ये सब बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

९ “उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे, और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो, सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे। १० उस समय बहुत से लोगों का मोह

\*२३ :३९ उद्धरण भजन संहिता ११८ :२६

†२४ :३ जैतून जैतून पर्वत यरूशलेम के निकट का एक पहाड़ जिस पर जैतून के बहुत से पेड़ थे।

टूट जायेगा और विश्वास डिंग जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकारियों के हाथों सौंपेंगे और परस्पर घृणा करेंगे।<sup>११</sup> बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और लोगों को ठगेंगे।<sup>१२</sup> क्योंकि अधर्मता बढ़ जायेगी सो बहुत से लोगों का प्रेम टंडा पड़ जायेगा।<sup>१३</sup> किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा।<sup>१४</sup> स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आयेगा।

<sup>१४</sup> "इसलिए जब तुम लोग 'भयानक विनाशकारी वस्तु को,' जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया था, मन्दिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो।" (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) <sup>१६</sup> "तब जो लोग यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये।<sup>१७</sup> जो अपने घर की छत पर हों, वह घर से बाहर कुछ भी ले जाने के लिए नीचे न उतरें।<sup>१८</sup> और जो बाहर खेतों में काम कर रहे हों, वह पीछे मुड़ कर अपने वस्त्र तक न लें।

<sup>१९</sup> "उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत कष्ट के होंगे।<sup>२०</sup> प्रार्थना करो कि तुम्हें सर्दियों के दिनों या सब्त के दिन भागना न पड़े।<sup>२१</sup> उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची है, आज तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी।

<sup>२२</sup> "और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किन्तु अपने चुने हुएों के कारण वह उन दिनों को कम करेगा।

<sup>२३</sup> "उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे, 'देखो, यह रहा मसीह!' <sup>२४</sup> या 'वह रहा मसीह' तो उसका विश्वास मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह और कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिन्ह दिखायेंगे और अदभूत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह चुने हुएों को भी चकमा दे दें।<sup>२५</sup> देखो मैंने तुम्हें पहल ही बता दिया है।

<sup>२६</sup> "सो यदि वे तुमसे कहें, 'देखो वह जंगल में है' तो वहाँ मत जाना और यदि वे कहें, 'देखो वह उन कमरों के भीतर छुपा है' तो उनका विश्वास मत करना।<sup>२७</sup> मैं यह कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू होकर पश्चिम के आकाश तक कौंध

जाती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा!<sup>२८</sup> जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

<sup>२९</sup> "उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद:

'सुरज काला पड़ जायेगा,  
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी  
आसमान से तारे गिरने लगेंगे  
और आकाश में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।' \*

<sup>३०</sup> "उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते देखेंगे।<sup>३१</sup> वह ऊँचे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

<sup>३२</sup> "अजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती हैं और कोंपल फूटने लगती हैं तुम लोग जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं।<sup>३३</sup> वैसे ही जब तुम यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना कि वह समय निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक।<sup>३४</sup> मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी।<sup>३५</sup> चाहे धरती और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा।"

केवल परमेश्वर जानता है  
कि वह समय कब आयेगा

(मरकुस १३ :३२-३७ ; लूका १७ :२६-३०, ३४-३६)

<sup>३६</sup> "उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वयं पुत्र। केवल परम पिता जानता है।

<sup>३७</sup> "जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही मनुष्य का पुत्र का आना भी होगा।<sup>३८</sup> वैसे ही जैसे लोग जलप्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे, ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं चढ़ा।<sup>३९</sup> उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जलप्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया।

"मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा।<sup>४०</sup> उस समय खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को उठा लिया जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा।<sup>४१</sup> चक्की पीसती दो औरतों में से

एक उठा ली जायेगी और एक वहीं पीछे छोड़ दी जायेगी।

४२ “सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाय। ४३ याद रखो यदि घर का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ जायेगा तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में संध नहीं लगाने देता। ४४ इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य का पुत्र आ जायेगा।

अच्छे सेवक और बुरे सेवक

(लूका १२:४१-४८)

४५ “तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है। ४६ धन्य है वह सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य करते पाता है। ४७ मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे अपनी समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा।

४८ “दूसरी तरफ़ सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता है मेरा स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है। ४९ सो वह अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है और शराबियों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है। ५० तो उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके आने की सोचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक नहीं। ५१ और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस  
कन्याओं की दृष्टान्त कथा

२५ १ “उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से मिलने निकलीं। २ उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच चौकस। ३ पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो ले लीं पर उनके साथ तेल नहीं लिया। ४ उधर चौकस कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी ले लिया। ५ क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी, सभी कन्याएँ ऊँघने लगीं और पड़ कर सो गयीं।

६ “पर आधी रात धूम मची, ‘आ हा! दूल्हा आ रहा है।’ उससे मिलने बाहर चलो।’

७ “उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुईं और अपनी मशालें तैयार कीं। ८ लापरवाह कन्याओं ने चौकस कन्याओं से कहा, ‘हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी मशालें बुझी जा रही हैं।’

९ “उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, ‘नहीं! हम नहीं दे सकतीं। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए काफी होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने वाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।’

१० “जब वे मोल लेने जा ही रही थी कि दूल्हा आ पहुँचा। सो वे कन्याएँ जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह के उत्सव में भीतर चली गईं और फिर किसी ने द्वार बंद कर दिया।

११ “आखिरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गईं और उन्होंने कहा, ‘स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोलो, हमें भीतर आने दो।’

१२ “किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, ‘मैं तुमसे सच कह रहा हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।’

१३ “सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टान्त कथा

(लूका १९:११-२७)

१४ “स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने यात्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया। १५ उसने एक को चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और तीसरे को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दे कर यात्रा पर निकल पड़ा। १६ जिसे चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ मिली थीं, उसने तुरन्त उस पैसे को काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कमा ली। १७ ऐसे ही जिसे दो थैलियाँ मिली थीं, उसने भी दो और कमा लीं। १८ पर जिसे एक मिली थीं उसने कहीं जाकर धरती में गक्का खोदा और अपने स्वामी के धन को गाड़ दिया।

१९ “बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। २० वह व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थीं, अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और थैलियाँ ले जाकर उससे बोला, ‘स्वामी, तुमने मुझे पाँच थैलियाँ सौंपी थीं। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं!’

२१ “उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘शाबाश! तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।’

२२ “फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दो थैलियाँ मिली थीं, अपने स्वामी के पास आया और बोला, ‘स्वामी, तूने मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की ये दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।’

२३ “उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘शाबाश! तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।’

२४ “फिर वह जिसे चाँदी की एक थैली मिली थी, अपने स्वामी के पास आया और बोला, ‘स्वामी, मैं जानता हूँ तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है जहाँ तूने बोया नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं डाला वहाँ फसल बटोरता है। २५ सो मैं डर गया था इसलिए मैंने जाकर चाँदी के सिक्कों की थैली को धरती में गाड़ दिया। यह ले जो तेरा है यह रहा, ले लो।’

२६ “उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘तू एक बुरा और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये काटता हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल बटोरता हूँ। २७ तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा करा देना चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था सूद के साथ ले लेता।’

२८ “इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले लो और जिसके पास चाँदी के सिक्कों की दस थैलियाँ हैं, इसे उसी को दे दो। २९ “क्योंकि हर उस व्यक्ति को, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग किया, और अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे आवश्यकता है, वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जायेगा। ३० सो उस बेकार के दास को बाहर अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।”

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

३१ “मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में अपने सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर बैठेगा ३२ तो सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जायेंगी और वह एक को दूसरे से

वैसे ही अलग करेगा, जैसे एक गडरिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग करता है। ३३ वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा और बकरियों को बाँई ओर।

३४ “फिर वह राजा, जो उसके दाहिनी ओर है, उनसे कहेगा, ‘मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया गया है उसका अधिकार लो। ३५ यह राज्य तुम्हारा है क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे भीतर ले गये। ३६ मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था, और तुम मेरे पास आये।’

३७ “फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, ‘प्रभु, हमने तुझे कब भूखा देखा और खिलाया या प्यासा देखा और पीने को दिया?’ ३८ तुझे हमने कब पास से जाता हुआ कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों के देखकर तुझे कपड़े पहनाए? ३९ और हमने कब तुझे बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?’

४० “फिर राजा उत्तर में उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे भोले-भाले भाईयों में से किसी एक के लिए भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।’

४१ “फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा, ‘अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस अनंत आग में जा गिरो। ४२ यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि मैं भूखा था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया, ४३ मैं अजनबी था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं कपड़ों के बिना नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाये। मैं बीमार और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान नहीं रखा।’

४४ “फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, ‘प्रभु, हमने तुझे भूखा या प्यासा या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।’

४५ “फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, ‘मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही बरती।’

४६ “फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।”

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षडयंत्र  
(मरकुस १४ :१-२ ; लूका २२ :१-२ ;  
यूहन्ना ११ :४५-५३)

**२६** <sup>१</sup>इन सब बातों के कह चुकने के बाद यीशु अपने शिष्यों से बोला, <sup>२</sup>“तुम लोग जानते हो कि दो दिन बाद फसह पर्व है। और मनुष्य का पुत्र शत्रुओं के हाथों क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए पकड़वाया जाने वाला है।”

<sup>३</sup>तब प्रमुख याजक और बुजुर्ग यहूदी नेता कैफ़ा नाम के प्रमुख याजक के भवन के आँगन में इकट्ठे हुए। <sup>४</sup>और उन्होंने किसी तरकीब से यीशु को पकड़ने और मार डालने की योजना बनायी। <sup>५</sup>फिर भी वे कह रहे थे, “हमें यह पर्व के दिनों नहीं करना चाहिये नहीं तो हो सकता है लोग कोई दंगा फ़साद करें।”

यीशु पर इत्र का छिड़काव

(मरकुस १४ :३-९ ; यूहन्ना १२ :१-८)

<sup>६</sup>यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था <sup>७</sup>तभी एक स्त्री सफेद चिकने, स्फटिक के पात्र में बहुत कीमती इत्र भर कर लायी और उसे उसके सिर पर उँडेल दिया। उस समय वह पटरे पर झुका बैठा था।

<sup>८</sup>जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे क्रोध में भर कर बोले, “इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी ? <sup>९</sup>यह इत्र अच्छे दामों में बेचा जा सकता था और फिर उस धन को दीन दुखियों में बाँटा जा सकता था।”

<sup>१०</sup>यीशु जान गया कि वे क्या कह रहे हैं। सो उनसे बोल, “तुम इस स्त्री को क्यों तंग कर रहे हो ? उसने तो मेरे लिए एक सुन्दर काम किया है <sup>११</sup>क्योंकि दीन दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। <sup>१२</sup>उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधित इत्र छिड़क कर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। <sup>१३</sup>मैं तुमसे सच कहता हूँ समस्त संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार-प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में, जो कुछ इसने किया है, उसकी चर्चा होगी।”

यहूदा यीशु से शत्रुता ठानता है

(मरकुस १४ :१०-११ ; लूका २२ :३-६)

<sup>१४</sup>तब यहूदा इस्करियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया और उनसे बोला, <sup>१५</sup>“यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम लोग मुझे क्या दोगे ?” तब

उन्होंने यहूदा को चाँदी के तीस सिक्के देने की इच्छा जाहिर की। <sup>१६</sup>उसी समय से यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ फ़सह भोज

(मरकुस १४ :१२-२१ ; लूका २२ :७-१४,  
२१-२३ ; यूहन्ना १३ :२१-३०)

<sup>१७</sup>बिना खमीर की रोटी के उत्सव के पहले दिन यीशु के शिष्यों ने पास आकर पूछा, “तू क्या चाहता है कि हम तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी कहाँ जाकर करें ?”

<sup>१८</sup>उसने कहा, “गाँव में उस व्यक्ति के पास जाओ और उससे कहो, कि गुरु ने कहा है, ‘मेरी निश्चित षड़ी निकट है, मैं तेरे घर अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व मनाने वाला हूँ।’” <sup>१९</sup>फिर शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने बताया था और फ़सह पर्व की तैयारी की।

<sup>२०</sup>दिन ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे पर झुका बैठा था। <sup>२१</sup>तभी उनके भोजन करते वह बोला, “मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से पकड़वायेगा।”

<sup>२२</sup>वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने लगा, “प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ ! बता क्या मैं हूँ ?”

<sup>२३</sup>तब यीशु ने उत्तर दिया, “वही जो मेरे साथ एक थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा। <sup>२४</sup>मनुष्य का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिस व्यक्ति के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि उसका जन्म ही न हुआ होता।”

<sup>२५</sup>तब उसे धोखे से पकड़वानेवाला यहूदा बोल उठा, “हे रब्बी, वह मैं नहीं हूँ। क्या मैं हूँ ?”

यीशु ने उससे कहा, “हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा है।”

प्रभु का भोज

(मरकुस १४ :२२-२६ ; लूका

२२ :१५-२० ; १ कुरिन्थ. ११ :२३-२५)

<sup>२६</sup>जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे आशीश दी और फिर तोड़ा। फिर उसे शिष्यों को देते हुए वह बोला, “लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है।”

<sup>२७</sup>फिर उसने प्याला उठाया और धन्यवाद देने के बाद उसे उन्हें देते हुए कहा, “तुम सब इसे थोड़ा थोड़ा पियो। <sup>२८</sup>क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक

नये वाचा की स्थापना करता है। यह बहुत लोगों के लिये बहाया जा रहा है। ताकि उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो सके। २९ मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस दिन तक दाखरस को नहीं चखूँगा जब तक अपने परम पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया दाखरस न पी लूँ।”

३० फिर वे फ़सह का भजन गाकर जैतून पर्वत पर चले गये।

यीशु का कथन: सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

(मरकुस १४ :२७-३१ ; लूका  
२२ :३१-३४ ; यूहन्ना १३ :३६-३८)

३१ फिर यीशु ने उनसे कहा, “आज रात तुम सब का मुझमें से विश्वास डिंग जायेगा। क्योंकि शास्त्र में लिखा है :

‘मैं गडेरिये को मारूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगी।’\*

३२ पर फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही गलील चला जाऊँगा।”

३३ पतरस ने उत्तर दिया, “चाहे सब तुझ में से विश्वास खो दें किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।”

३४ यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ में सत्य कहता हूँ आज इसी रात मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।”

३५ तब पतरस ने उससे कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी तुझे मैं कभी नहीं नकारूँगा।” बाकी सब शिष्यों ने भी वही कहा।

यीशु की एकान्त प्रार्थना

(मरकुस १४ :३२-४२ ; लूका २२ :३९-४६)

३६ फिर यीशु उनके साथ उस स्थान पर आया जो गतसमने कहलाता था। और उसने अपने शिष्यों से कहा, “जब तक मैं वहाँ जाऊँ और प्रार्थना करूँ, तुम यहीं बैठो।” ३७ फिर यीशु पतरस और जब्दी के दो बेटों को अपने साथ ले गया और दुःख तथा व्याकुलता अनुभव करने लगा। ३८ फिर उसने उनसे कहा, “मेरा मन बहुत दुःखी है, जैसे मेरे पूराण निकल जायेंगे। तुम मेरे साथ यहीं ठहरो और सावधान रहो।”

३९ फिर थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक कर प्रार्थना करने लगा। उसने कहा, “हे मेरे परम पिता यदि हो सके तो यातना का यह प्याला मुझसे टल जाये। फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही कर।”

४० फिर वह अपने शिष्यों के पास गया और उन्हें सोता पाया। वह पतरस से बोला, “सो तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी नहीं जाग सके? ४१ जगते रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। तुम्हारा मन तो वही करना चाहता है जो उचित है किन्तु, तुम्हारा शरीर दुर्बल है।”

४२ एक बार फिर उसने जाकर प्रार्थना की और कहा, “हे मेरे परम पिता, यदि यातना का यह प्याला मेरे पिये बिना टल नहीं सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।”

४३ तब वह आया और उन्हें फिर सोते पाया। वे अपनी आँखें खोले नहीं रख सके। ४४ सो वह उन्हें छोड़कर फिर गया और तीसरी बार भी पहले की तरह उन ही शब्दों में प्रार्थना की।

४५ फिर यीशु अपने शिष्यों के पास गया और उनसे पूछा, “क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? सुनो, समय आ चुका है, जब मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों सौंपा जाने वाला है। ४६ उठो, आओ चलें। देखो, मुझे पकड़वाने वाला यह रहा।”

यीशु को बंदी बनाना

(मरकुस १४ :४३-५० ; लूका  
२२ :४७-५३ ; यूहन्ना १८ :३-१२)

४७ यीशु जब बोल ही रहा था, यहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था, आया। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं की भेजी एक बड़ी भीड़ भी थी। ४८ यहूदा ने जो उसे पकड़वाने वाला था, उन्हें एक संकेत देते हुए कहा कि जिस किसी को मैं चूमूँ वही यीशु है, उसे पकड़ लो, ४९ फिर वह यीशु के पास गया और बोला, “हे गुरु!” और बस उसने यीशु को चूम लिया।

५० यीशु ने उससे कहा, “मित्र जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर।”

फिर भीड़ के लोगों ने पास जा कर यीशु को दबोच कर बंदी बना लिया। ५१ फिर जो लोग यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींच ली और वार करके महायाजक के दास का कान उड़ा दिया।

५२ तब यीशु ने उससे कहा, “अपनी तलवार को म्यान में रखो। जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से ही मारे जायेंगे। ५३ क्या तुम नहीं सोचते कि मैं अपने परम पिता को बुला सकता हूँ और वह तुरंत स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से भी अधिक मेरे पास भेज देगा? ५४ किन्तु यदि मैं ऐसा करूँ तो शास्त्रों

\*२६ :३१ उद्धरण जकर्याह १३ :७



की लिखी यह कैसे पूरी होगी कि सब कुछ ऐसे ही होना है ?”

५५ उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, “तुम तलवारों, लाठियों समेत मुझे पकड़ने ऐसे क्यों आये हो जैसे किसी चोर को पकड़ने आते हैं ? मैं हर दिन मन्दिर में बैठा उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि भविष्यवक्ताओं की लिखी पूरी हो।” फिर उसके सभी शिष्य उसे छोड़कर भाग खड़े हुए।

यहूदी नेताओं के सामने यीशु की पेशी

(मरकुस १४ :५३-६५ ; लूका २२ :५४-५५,  
६३-७१ ; यूहन्ना १८ :१३-१४, १९-२४)

५७ जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे कैफ़ा नामक महायाजक के सामने ले गये। वहाँ यहूदी धर्मशास्त्री और बुजुर्ग यहूदी नेता भी इकट्ठे हुए। ५८ पतरस उससे दूर-दूर रहते उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और फिर नतीजा देखने वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ गया।

५९ महायाजक समूची यहूदी महासभा समेत यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए उसके विरोध में कोई अभियोग ढूँढने का यत्न कर रहे थे। ६० पर ढूँढ नहीं पाये। यद्यपि बहुत से झूठे गवाहों ने आगे बढ़ कर झूठ बोला। अंत में दो व्यक्ति आगे आये ६१ और बोले, “इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना सकता हूँ।”

६२ फिर महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, “क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि वे लोग तेरे विरोध में यह क्या गवाही दे रहे हैं ?” ६३ किन्तु यीशु चुप रहा।

फिर महायाजक ने उससे पूछा, “मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ, हमें बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है ?”

६४ यीशु ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं हूँ। किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र ही देखोगे।”

६५ महायाजक यह सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि वह अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला, “इसने जो बातें कही हैं वे परमेश्वर की निन्दा में जाती हैं। अब हमें और गवाह नहीं चाहिये। तुम सब ने परमेश्वर के विरोध में कहेते, इसे सुना है। ६६ तुम लोग क्या सोचते हो ?”

उत्तर में वे बोले, “यह अपराधी है। इसे मर जाना चाहिये।”

६७ फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे। कुछ ने थप्पड़ मारे और कहा, ६८ “हे मसीह ! भविष्यवाणी कर कि वह कौन है जिसने तुझे मारा ?”

पतरस का यीशु को नकारना

(मरकुस १४ :६६-७२ ; लूका २२ :५६-६२ ;  
यूहन्ना १८ :१५-१८, २५-२७)

६९ पतरस अभी नीचे आँगन में ही बाहर बैठा था कि एक दासी उसके पास आयी और बोली, “तू भी तो उसी गलीली यीशु के साथ था।”

७० किन्तु सब के सामने पतरस मुकर गया। उसने कहा, “मुझे पता नहीं तू क्या कह रही है।”

७१ फिर वह डयोढ़ी तक गया ही था कि एक दूसरी स्त्री ने उसे देखा और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली, “यह व्यक्ति यीशु नासरी के साथ था।”

७२ एक बार फिर पतरस ने इन्कार किया और कसम खाते हुए कहा, “मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।”

७३ थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास गये और उससे बोले, “तेरी बोली साफ बता रही है कि तू असल में उन्हीं में से एक है।”

७४ तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, “मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।” तभी मुर्गे ने बाँग दी। ७५ तभी पतरस को वह याद हो आया जो यीशु ने उससे कहा था, “मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकारेगा।” तब पतरस बाहर चला गया और फूट फूट कर रो पड़ा।

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

(मरकुस १५ :१ ; लूका २३ :१-२ ;  
यूहन्ना १८ :२८-३२)

२७ अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी बुजुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा। २ फिर वे उसे बाँध कर ले गये और राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा की आत्महत्या

(प्र.क. १ :१८-१९)

३ यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि यीशु को दोषी ठहराया गया है, तो वह बहुत पछताया और उसने प्रमुख याजकों और बुजुर्ग

यहूदी नेताओं को चाँदी के वे तीस सिक्के लौटा दिये।<sup>४</sup> उसने कहा, “मैंने एक निरपराध व्यक्ति को मार डालने के लिए पकड़वा कर पाप किया है।”

इस पर उन लोगों ने कहा, “हमें क्या! यह तेरा अपना मामला है।”

<sup>५</sup> इस पर यहूदा चाँदी के उन सिक्कों को मन्दिर के भीतर फेंक कर चला गया और फिर बाहर जाकर अपने को फाँसी लगा दी।

<sup>६</sup> प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा, “हमारे नियम के अनुसार इस धन को मन्दिर के कोष में रखना उचित नहीं है क्योंकि इसका इस्तेमाल किसी को मरवाने कि लिए किया गया था।”<sup>७</sup> इसलिए उन्होंने उस पैसे से कुम्हार का खेत खरीदने का निर्णय किया ताकि बाहर से यरूशलेम आने वाले लोगों को मरने के बाद उसमें दफनाया जाये।<sup>८</sup> इसीलिये आज तक वह खेत लहू का खेत के नाम से जाना जाता है।<sup>९</sup> इस प्रकार परमेश्वर का, भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा कहा यह वचन पूरा हुआ:

“उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए, वह रकम जिसे इस्राएल के लोगों ने उसके लिये देना तय किया था।<sup>१०</sup> और प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेश के अनुसार उससे कुम्हार का खेत खरीदा।” \*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

(मरकुस १५ :२-५ ; लूका

२३ :३-५ ; यूहन्ना १८ :३३-३८)

<sup>११</sup> इसी बीच यीशु राज्यपाल के सामने पेश हुआ। राज्यपाल ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?”

यीशु ने कहा, “हाँ, मैं हूँ।”

<sup>१२</sup> दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और बुजुर्ग यहूदी नेता उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

<sup>१३</sup> तब पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू नहीं सुन रहा है कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं?”

<sup>१४</sup> किन्तु यीशु ने पिलातुस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस को इस पर बहुत अचरज हुआ।

यीशु को छोड़ने में पिलातुस असफल

(मरकुस १५ :६-१५ ; लूका

२३ :३३-२५ ; यूहन्ना १८ :३९-१९ :१६)

<sup>१५</sup> फसह पर्व के अवसर पर राज्यपाल का रिवाज था कि वह किसी भी एक कैदी को, जिसे भीड़ चाहती थी, उनके लिए छोड़ दिया करता था।<sup>१६</sup> उसी समय बरअब्बा नाम का एक बदनाम कैदी वहाँ था।

<sup>१७</sup> सो जब भीड़ आ जुटी तो पिलातुस ने उनसे पूछा, “तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिये किसे छोड़ूँ, बरअब्बा को या उस यीशु को, जो मसीह कहलाता है?”<sup>१८</sup> पिलातुस जानता था कि उन्होंने उसे डाह के कारण पकड़वाया है।

<sup>१९</sup> पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा था तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा, “उस सीधे सच्चे मनुष्य के साथ कुछ मत कर बैठना। मैंने उसके बारे में एक सपना देखा है जिससे आज सारे दिन मैं बेचैन रही।”

<sup>२०</sup> किन्तु प्रमुख याजकों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं ने भीड़ को बहकाया, फुसलाया कि वह पिलातुस से बरअब्बा को छोड़ने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें।

<sup>२१</sup> उत्तर में राज्यपाल ने उनसे पूछा, “मुझ से दोनों कैदियों में से तुम अपने लिये किसे छोड़वाना चाहते हो?”

उन्होंने उत्तर दिया, “बरअब्बा को!”

<sup>२२</sup> तब पिलातुस ने उनसे पूछा, “तो मैं, जो मसीह कहलाता है उस यीशु का क्या करूँ?”

वे सब बोले, “उसे क्रूस पर चढ़ा दो।”

<sup>२३</sup> पिलातुस ने पूछा, “क्यों, उसने क्या अपराध किया है?”

किन्तु वे तो और अधिक चिल्लाये, “उसे क्रूस पर चढ़ा दो।”

<sup>२४</sup> पिलातुस ने देखा कि अब कोई लाभ नहीं। बल्कि दंगा भड़कने को है। सो उसने थोड़ा पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोये, वह बोला, “इस व्यक्ति के खून से मेरा कोई सरोकार नहीं है। यह तुम्हारा मामला है।”

<sup>२५</sup> उत्तर में सब लोगों ने कहा, “इसकी मौत की जवाबदेही हम और हमारे बच्चे स्वीकार करते हैं।”

<sup>२६</sup> तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

\*२७ :१० उन्होंने ... खरीदा देखें जकर्य. ११ :१२-१३ ; यिर्म. ३२ :६-९

### यीशु का उपहास

(मरकुस १५ : १६-२० ; यूहन्ना १९ : २-३)

२७ फिर पिलातुस के सिपाही यीशु को राज्यपाल निवास के भीतर ले गये। वहाँ उसके चारों तरफ सिपाहियों की पूरी पलटन इकट्ठी हो गयी। २८ उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये और चमकीले लाल रंग के वस्त्र पहना कर २९ काँटों से बना एक ताज उसके सिर पर रख दिया। उसके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमा दिया और उसके सामने अपने घुटनों पर झुक कर उसकी हँसी उड़ाते हुए बोले, “यहूदियों का राजा अमर रहे।” ३० फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका, छड़ी छीन ली और उसके सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उसकी हँसी उड़ा चुके तो उसकी पोशाक उतार ली और उसे उसके अपने कपड़े पहना कर क़रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

### यीशु का क़रूस पर चढ़ाया जाना

(मरकुस १५ : २१-३२ ; लूका

२३ : २६-३९ ; यूहन्ना १९ : १७-१९)

३२ जब वे बाहर जा ही रहे थे तो उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उस पर दबाव डाला कि वह यीशु का क़रूस उठा कर चले। ३३ फिर जब वे गुलगुता (जिसका अर्थ है “खोपड़ी का स्थान।”) नामक स्थान पर पहुँचे तो ३४ उन्होंने यीशु को पित्त मिली दाखरस पीने को दी। किन्तु जब यीशु ने उसे चखा तो पीने से मना कर दिया।

३५ सो उन्होंने उसे क़रूस पर चढ़ा दिया और उसके वस्त्र पास फेंक कर आपस में बाँट लिये। ३६ इसके बाद वे वहाँ बैठ कर उस पर पहरा देने लगे। ३७ उन्होंने उसका अभियोग पत्र लिखकर उसके सिर पर टाँग दिया, “यह यहूदियों का राजा यीशु है।”

३८ इसी समय उसके साथ दो डाकू भी क़रूस पर चढ़ाये जा रहे थे एक उसके दाहिने ओर और दूसरा बायीं ओर। ३९ पास से जाते हुए लोग अपना सिर मटकाते हुए उसका अपमान कर रहे थे। ४० वे कह रहे थे, “अरे मन्दिर को गिरा कर तीन दिन में उसे फिर से बनाने वाले, अपने को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क़रूस से नीचे उतर आ।”

४१ ऐसे ही महायाजक, धर्मशास्त्रियों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं के साथ उसकी यह कहकर

हँसी उड़ा रहे थे : ४२ “दूसरों का उद्धार करने वाला यह अपना उद्धार नहीं कर सकता! यह इस्राएल का राजा है। यह क़रूस से अभी नीचे उतरे तो हम इसे मान लें।” ४३ यह परमेश्वर में विश्वास करता है। सो यदि परमेश्वर चाहे तो अब इसे बचा ले। आखिर यह तो कहता भी था, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।” ४४ उन लुटेरों ने भी जो उसके साथ क़रूस पर चढ़ाये गये थे, उसकी ऐसे ही हँसी उड़ाई।

### यीशु की मृत्यु

(मरकुस १५ : ३३-४१ ; लूका

२३ : ४४-४९ ; यूहन्ना १९ : २८-३०)

४५ फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक अन्धेरा छाया रहा। ४६ कोई तीन बजे के आस-पास यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा “एली, एली, लमा शबक्तनी।” अर्थात्, “मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

४७ वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे यह एलिय्याह को पुकार रहा है।

४८ फिर तुरंत उनमें से एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को चूसने के लिए दिया। ४९ किन्तु दूसरे लोग कहते रहे कि छोड़ो देखते हैं कि एलिय्याह इसे बचाने आता है या नहीं?

५० यीशु ने फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार कर प्राण त्याग दिये।

५१ उसी समय मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। धरती काँप उठी। चट्टानें फट पड़ीं। ५२ यहाँ तक कि कब्रें खुल गयीं और परमेश्वर के मरे हुए बंदों के बहुत से शरीर जी उठे। ५३ वे कब्रों से निकल आये और यीशु के जी उठने के बाद पवित्र नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिये।

५४ रोमी सेना नायक और यीशु पर पहरा दे रहे लोग भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देख कर डर गये थे। वे बोले, “यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था।”

५५ वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। जो दूर से देख रही थीं। वे यीशु की देखभाल के लिए गलील से उसके पीछे आ रही थीं। ५६ उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की माता मरियम तथा जब्दी के बेटों की माता थीं।

### यीशु का दफ़न

(मरकुस १५ :४२-४७ ; लूका

२३ :५०-५६ ; यूहन्ना १९ :३८-४२)

५७ साँझ के समय अरिमतिथाह नगर से यूसुफ़ नाम का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी हो गया था। ५८ यूसुफ़ पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये। ५९ यूसुफ़ ने शव ले लिया और उसे एक नयी चादर में लपेट कर ६० अपनी निजी नयी कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर बनवाया था। फिर उसने चट्टान के दरवाजे पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। ६१ मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं।

### यीशु की कब्र पर पहरा

६२ अगले दिन जब शुक्रवार बीत गया तो प्रमुख याजक और फ़रीसी पिलातुस से मिले। ६३ उन्होंने कहा, “महोदय हमें याद है कि उस छली ने, जब वह जीवित था, कहा था कि तीसरे दिन मैं फिर जी उठूँगा। ६४ तो आज्ञा दीजिये कि तीसरे दिन तक कब्र पर चौकसी रखी जाये। जिससे ऐसा न हो कि उसके शिष्य आकर उसका शव चुरा ली जायें और लोगों से कहें वह मरे हुएों में से जी उठा। यह दूसरा छलावा पहले छलावे से भी बुरा होगा।”

६५ पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम पहरे के लिये सिपाही ले सकते हो। जाओ जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।” ६६ तब वे चले गये और उस पत्थर पर मुहर लगा कर और पहरेदारों को वहाँ बैठा कर कब्र को सुरक्षित कर दिया।

### यीशु का फिर से जी उठना

(मरकुस १६ :१-८ ; लूका

२४ :१-१२ ; यूहन्ना २० :१-१०)

२८ सप्त के बाद जब रविवार की सुबह पौ फट रही थी, मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम कब्र की जाँच करने आईं।

२ क्योंकि स्वर्ग से प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ उतरा था, इसलिए उस समय एक बहुत बड़ा भूचाल आया। स्वर्गदूत ने वहाँ आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। ३ उसका रूप आकाश की बिजली की तरह चमचमा रहा था और उसके वस्त्र बर्फ़ के जैसे उजले थे। ४ वे सिपाही

जो कब्र का पहरा दे रहे थे, डर के मारे काँपने लगे और ऐसे हो गये जैसे मर गये हों।

५ तब स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों से कहा, “डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो जिसे क़रूस पर चढ़ा दिया गया था। ६ वह यहाँ नहीं है। जैसा कि उसने कहा था, वह मौत के बाद फिर जिला दिया गया है। आओ, उस स्थान को देखो, जहाँ वह लेटा था। ७ और फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से कहो, ‘वह मरे हुएों में से जिला दिया गया है और अब वह तुमसे पहले गलील को जा रहा है तुम उसे वही देखोगे’ जो मैंने तुमसे कहा है, उसे याद रखो।”

८ उन स्त्रियों ने तुरंत ही कब्र को छोड़ दिया। वे भय और आनन्द से भर उठी थीं। फिर यीशु के शिष्यों को यह बताने के लिये वे दौड़ पड़ीं। ९ अचानक यीशु उनसे मिला और बोला, “अरे तुम !” वे उसके पास आयीं, उन्होंने उसके चरण पकड़ लिये और उसकी उपासना की। १० तब यीशु ने उनसे कहा, “डरो मत, मेरे बंधुओं के पास जाओ, और उनसे कहो कि वे गलील के लिए रवाना हो जायें, वहाँ वे मुझे देखेंगे।”

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

११ अभी वे स्त्रियाँ अपने रास्ते में ही थीं कि कुछ सिपाही जो पहरेदारों में थे, नगर में गए और जो कुछ घटा था, उन सब की सूचना प्रमुख याजकों को जा सुनाई। १२ सो उन्होंने बुजुर्ग यहूदी नेताओं से मिल कर एक योजना बनायी। उन्होंने सिपाहियों को बहुत सा धन देकर १३ कहा कि वे लोगों से कहें कि यीशु के शिष्य रात को आये और जब हम सो रहे थे उसकी लाश को चुरा ले गये। १४ यदि तुम्हारी यह बात राज्यपाल तक पहुँचती है तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई आँच नहीं आने देंगे। १५ पहरेदारों ने धन लेकर वैसा ही किया, जैसा उन्हें बताया गया था। और यह बात यहूदियों में आज तक इसी रूप में फैली हुई है।

### यीशु की अपने शिष्यों से बातचीत

(मरकुस १६ :१४-१८ ; लूका २४ :३६-४९ ;

यूहन्ना २० :१९-२३ ; प्र.क. १ :६-८)

१६ फिर ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ जाने को उनसे यीशु ने कहा था। १७ जब उन्होंने यीशु को देखा तो उसकी उपासना की। यद्यपि कुछ के मन में संदेह था। १८ फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, “स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं। १९ सो, जाओ और

सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में, उन्हें बपतिस्मा देकर पूरा करना है। २० वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें

दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।”